वेद और कुरआन का
ब्रह्मतत्व

शकील अहमद

iqra RESEARCH ACADEMY
इक़रा रिसर्च एकाडेमी

वेद और कुरआन का

ब्रह्मतत्त्व

लेखक

शकील अहमद

प्रकाशक

इकरा रिसर्च एकाडेमी

मेट्रो मंजील, दीवान बाजार, कटक - 753001

पुस्तक का नाम :

वेद और कुरआन का ब्रह्मतत्त्व

Ved Aur Quran Ka Brahmatatwa

लेखक :

शकील अहमद

प्रकाशक :

इकरा रिसर्च एकाडेमी

मेट्रो मंजील, दीवान बाजार, कटक-753001 (उड़ीसा)

प्रथम संस्करण : 2014

मुद्रक :

जगन्नाथ प्रोसेस प्रा: लि:, कटक

मूल्य : 60/- रुपये

بسم الله الرحمن الرحيم

अनंत दयावान असीम कृपाशील अल्लाह के नाम से

भूमिका

हिन्दू और मुसलमान हमारे देश के दो बड़े संप्रदाय हैं। इन दो समुदायों के बीच सद्भाव, हमारे देश की शान्ति और एकता के लिए बहुत ही आवश्यक है। गांधीजी ने अपने मन की व्यथा व्यक्त करते हुए कहा था "मेरी इच्छा है कि आवश्यक होने पर में दोनों को अपने खून से जोड़ दूँ ।'' (यंग इंडिया, २५.९.१९२४)

हम हिन्दू और मुसलमान सदियों से एक मुल्क में साथ साथ रहते-बसते हैं, मगर हम एक दूसरे के धर्म और संस्कृति के विषय में बहुत कम ही जानते हैं। पड़ोसी के विषय में जानना तो दूर, हम में से अधिकतर यह भी नहीं जानते कि हमारे अपने ग्रंथों में क्या लिखा है। यह अज्ञानता हमारी दूरी की एक मुख्य कारण बनी हुई है। सांप्रदायिक शक्तियाँ इसका लाभ ले कर नफरत फैलाती हैं । थोड़े से स्वार्थ के लिए देश को खतरे में ड़ाल दिया जाता है। धर्म के नाम पर कितना खून बहाया गया है, कितनी औरतें बेवा हुई हैं और कितने बच्चे अनाथ हुए हैं, हम इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। इसलिए हमें एक दूसरे को समझने की आवश्यकता है।

हम सब एक परिवार हैं । सब का मालिक एक है और सबके लिए प्राकृतिक नियम एक समान हैं। हमारे पूर्वज एक ही थे और हमारा मूल धर्म भी एक ही था। इस लिए आज भी विश्व के महान ग्रंथों के पन्नों पर हमें सैद्धान्तिक रूप से बहुत सारी बातें मिलती हैं जो सभी ग्रन्थों में एक समान हैं। इसलाम और सनातन धर्म का सादृश्य तो चौंका देने वाला है। अज्ञानता के कारण कुछ लोग इसलाम और सनातन धर्म को एक दूसरे का विरोधी समझते हैं, परन्तु हमारा अध्ययन यह कहता है कि इसलाम का वैदिक धर्म के साथ बहुत गहरा संवंध है ।

इस पुस्तक में इसके पर्याप्त प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं। हिन्दू-मुस्लिम संबन्ध को मधुर बनाने की अभिलाषा ने मुझे इस पुस्तक की रचना के लिए उत्प्रेरित किया है। मुझे आशा है कि यह पुस्तक भारत के दो बृहत संप्रदायों को एक दूसरे को समझने और उन्हें एक दूसरे के निकट लाने में सहायता कर सकती है।

लगभग सभी धर्मग्रंथ परमेश्वर को एक कहते हैं, परन्तु ईश्वरतत्त्व कहीं कहीं विवादित भी है। आज विश्व के किसी भी ग्रंथ के किसी भी अनुवाद को उस धर्म के सभी अनुयायी स्वीकार नहीं कर पाए हैं। धर्म के विद्वान ईश्वर की किसी एक परिभाषा से सहमत नहीं हो सके हैं। मतभेद प्रत्येक धर्म में कुछ न कुछ है। इसलाम भी इस से खाली नहीं है, मगर ईश्वरतत्त्व इसलाम में विवादित नहीं है।

इस पुस्तक में ईश्वरतत्त्व की व्याख्या करते हुए मैं ने सनातन धर्म और इसलाम की तुलनात्मक चर्चा की है। मैं ने यह बताने का प्रयास किया है कि वैदिक धर्म और इसलाम का ईश्वरतत्त्व एक समान है और हिन्दू और मुसलमानों के ईश्वर भिन्न नहीं हैं। जिस पवित्र सत्ता को वेद और उपनिषद 'ब्रह्म' कहते हैं, उसी को कुरआन में 'अल्लाह' कहा गया है। बाइबिल में उसे 'यहोवा' कहा गया है। भाषा का अन्तर है। कुरआन ने किसी अज्ञात ईश्वर की बात नहीं कही है, बल्कि उन्हीं बातों को दोहराया है जो वेद और वाइबिल में कही जा चुकी हैं।

हमारा भारत विविध संस्कृति का देश है। यहाँ हिन्दु, मुसलमान, सिख, इसाई, बौद्ध, जैन, पारसी आदि अनेक संप्रदाय बसते हैं। उनके धार्मिक विचार एक दूसरे से अलग हैं। विभिन्न संस्कारों में पले लोगों के विचारों में भिन्नता कोई बड़ी बात नहीं है। बड़ी बात भिन्नता में एकता है जो इस महान देश की विशेषता है। इस एकता को बनाए रखना हम सब का दायित्व है और इसे हम अपनी पसन्द के मार्ग पर चलते हुए भी निभा सकते हैं।

कभी एक दूसरे को गलत समझने के कारण भी आपसी संबन्ध खराब होते हैं। इसलाम के विषय में फैलाई गई गलतफहमीयों ने हमारे संबध को बिगाड़ने में बड़ी भूमिका निभाई हैं। सांप्रदायिक या राजनैतिक फायदे के लिए इसलाम की तस्वीर को बिगाड़ कर दुनिया के सामने प्रस्तुत किया गया और कुरआन की पवित्र वाणियों को उनके वांछित प्रसंगों से अलग करके उन्हें नफरत फैलाने के

लिए व्यवहार किया गया। इसलाम के विरुद्ध लोगों के मन में जहर भरने के लिए हजारों की संख्या में पुस्तकें लिखी गई हैं।

कुरआन करुणामय का विधान है और मानव कल्याण इसका लक्ष्य है। विश्वपिता का विधान विश्वशांति का विरोधी हो, ऐसा संभव नहीं है। इस पवित्र ग्रंथ में ऐसी एक भी शिक्षा नहीं है जो मानव समाज के लिए हानिकारक हो। समाज के धन, जीवन, मान, मर्यादा और चरित्र आदि को नुकसान पहुँचाने वाले सारे आचरण इसलाम में निषिद्ध हैं। कुरआन में जहाँ भी शक्ति प्रयोग के आदेश दिये गये हैं, वे अत्याचार के विरुद्ध मानव अधिकारों के संरक्षण के लिए, अपराध नियंत्रण या प्रतिरक्षा के लिए दिये गये हैं। धर्म का यह तत्त्व वेद, बाइबल और गीता में भी एक समान पाया जाता है। धर्मग्रन्थों के वाक्यों को उनकी पृष्ठभूमि से अलग कर के अपनी इच्छा अनुसार अर्थ करना एक खतरनाक कार्य है।

अपने मालिक की उपासना करना और उसकी प्रजा का कल्याण करना मुसलमानों का धर्म है और इसका पालन वे ईशदूत हजरत मुहम्मद के उपदेश अनुसार करते हैं। जिस प्रकार 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' सनातन संस्कृति का आदर्श है, उसी प्रकार सबका कल्याण करना एक मुसलमान का धर्म है। हजरत मुहम्मद कहते हैं "तुम में से कोई मुसलमान हो नहीं सकता जबतक वह दूसरों के लिये वही पसंद न करे, जो वह अपने लिए पसंद करता है।" (सही बुखारी, १:१२)। परोपकार की इस से बेहतर परिभाषा और क्या हो सकती है।

अगर हम एक दूसरे को समझने का प्रयत्न करें और भिन्नता पर चर्चा छोड़ कर समानताओं की ओर कदम बढ़ाएं, तो शायद हमारे बीच ये फासले नहीं रहेंगे और यह परायापन नहीं रहेगा ।

शकील अहमद

कटक (उड़ीशा) — मोबाइल : 09861269764

३० जून, २०१४ — इ-मेल : shakeel00mail@gmail.com

इस पुस्तक में विश्व के महान ग्रन्थों की पवित्र वाणियाँ उद्धृत की गई हैं। सभी भाई और बहनों से निवेदन है, कृपया पुस्तक की पवित्रता को ध्यान में रखते हुए इसकी गारिमा बनाए रखें ।

लेखक

ORGANISATIONS / PUBLISHERS
INTERESTED TO PUBLISH THIS BOOK MAY CONTACT US.

IQRA RESEARCH ACADEMY

Metro Manzil, Dewan Bazar
Cuttack-753001 (Odisha)
Cell : 09437266208
e-Mail : iqraresearch@gmail.com
Website : www.iqraresearch.net

विषय सूची

भगवद् विश्वास

भगवद् विश्वास धर्म का आधार है। धर्म की सबसे पहली मान्यता यही है कि सृष्टि का एक अदृश्य कर्त्ता है और संसार उसकी रचना है। वह सबका मालिक है। उस महान सत्ता को ईश्वर, गॉड़, यहोवा, अल्लाह आदि नाम से पुकारा जाता है। परंतु कुछ लोग ईश्वर को नहीं मानते। उनका कहना है कि ईश्वर नहीं है और यह मनुष्य की मात्र कल्पना है। धर्म नाम का अफीम खिला कर धर्मगुरुओं ने लोगों को चकमा दे रखा है। संसार का निर्माण किसी ने नहीं किया है, न ही कोई इसका प्रबन्धक है। इसका निर्माण अपने आप हुआ और आप चल रहा है। जब कोई दिखाई नहीं देता हो तो उसे कैसे मान लिया जाए? कर्त्ता अदृश्य होने के कारण यह समझ लिया जाता है कि उसका अस्तित्व नहीं है।

अगर कोई चीज हमें दिखाई न दे, क्या यह मान लेनी चाहिए कि वह नहीं है? हां, यह और बात है कि उसका अस्तित्व सिद्ध होना चाहिए। किसी बात पर विश्वास करने या न करने के लिए प्रमाण की आवश्यकता होती है, जिसके आधार पर हम किसी परिणाम तक पहुंचते हैं। यह प्रमाण मुख्यत: तीन प्रकार के होते हैं। पहला है- प्रत्यक्ष प्रमाण, दूसरा- बौद्धिक प्रमाण और तीसरा है- शब्द प्रमाण। मान लीजिये कि आपके मित्र इस समय घर में उपस्थित हैं या नहीं, यह आप मालूम करना चाहते हैं। इसके तीन उपाय हैं। पहला, आप स्वयं मित्र के घर गये और उन्हें आपने अपनी आँखों से देखा। यहां मित्रकी उपस्थिति पर आप को किसी प्रकार का संदेह नहीं होता क्योंकि आपने उन्हें प्रत्यक्ष रूप से देखा है। इसे प्रत्यक्ष प्रमाण कहते हैं। दूसरा उपाय यह है कि आपने मित्र को आँखों से तो नहीं देखा, मगर उनके घर के बाहर रह कर अन्दर से उनकी आवाज सुनी। उनकी आवाज को आपने उनकी उपस्थिति का प्रमाण माना। इस प्रकार भी आपको दृढ़ विश्वास हो जाता है कि मित्र घर में उपस्थित हैं। इसे बौद्धिक प्रमाण कहते हैं। तीसरा है शब्द प्रमाण। आपने मित्र को नहीं देखा, न उनकी आवाज सुनी मगर

किसीने आपको खबर दी कि आपके मित्र घर पर मौजूद हैं। अगर वह व्यक्ति सच्चा होता है तो आप उसकी बातों को प्रमाण मान लेते हैं। इसे शब्द प्रमाण कहा जाता है। यहां आप खबर देने वाले पर विश्वास करते हैं। इस स्थिति में खबर के माध्यमों का सही होना अवशयक है। इसलिए, शब्द प्रमाण को भी बौद्धिक दृष्टिकोण से जांच की जाती है। जहां प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं होता, वहां बौद्धिक प्रमाणों के आधार पर सत्य का पता लगाया जाता है। ईश्वर का अस्तित्व भी बौद्धिक प्रमाण से सिद्ध होता है।

कई चीजें दिखाई नहीं देतीं, मगर उनका अस्तित्व माना जाता है। शरीर के अन्दर आत्मा होती है, पर दिखती नहीं । वह कैसी है, किसी ने नहीं देखा, मगर सब मानते हैं। बिजली के तार के अन्दर विद्युत प्रवाह है या नहीं, दिखाई नहीं देती, परन्तु टेष्टर से जांच करके मान लिया जाता है। किसी कच्चे सड़क पर हम सांप के जाने का चिह्न देखते हैं। सांप को देखे बिना, केवल मिट्टी पर उसका निशान देख कर हम यह विश्वास कर लेते हैं कि इस रास्ते से सांप निकला है। गाय को न देख कर केवल रास्ते पर गाय का गोबर देखकर हम कह देते हैं की इस रास्ते से गाय निकली है। सदैव प्रत्यक्ष प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती। कारण हो तो कर्त्ता अवश्य मौजूद होता है। इसी सिद्धान्त के आधार पर पुलिस अपराधी को पकड़ती है। घटना स्थल पर अपराधी मौजूद नहीं होता मगर उसके कुछ चिह्न मौजूद होते हैं, जिनके आधार पर पुलिस अपराधी तक पहुँच जाती है। यहाँ कारण से कर्त्ता का पता लगाया जाता है।

क्या हमने कभी यह सोचा है कि वह कौन है जिसने हमें संसार में लाया है? हमने तो यहाँ आने के लिए आवेदन पत्र नहीं दिया था? कौन हमारे जीवित रहने का प्रबन्ध करता है? गर्भाशय के अन्दर जीव का निर्माण कौन करता है? गर्भस्थ शिशु के विकास में, न माँ का योगदान है, ना बाप का, न डाक्टर का न ही विज्ञान की कोई भूमिका है। फिर यह कृति किस की है?

मनुष्य दुःख या संकट नहीं चाहता। कौन उसकी इच्छा के विरुद्ध उसे संकट में डाल देता है ? कौन उसकी इच्छा के विरुद्ध उसे मरने पर मजबूर करता

है? बीज का अंकुर इतना कोमल होता है कि हाथों से मसल देने पर नष्ट हो जाता है। मगर वह पत्थर के सीने को फाड़ कर बाहर निकल आता है। कौन उसे निकालता है?

एक ही मट्टी, एक ही पानी और एक ही तापमान में बढ़े वृक्षों के फलों के स्वाद भिन्न भिन्न होते हैं। जो पानी आम के पेड़ को मिलता है, वही पानी नीम के पेड़ को भी मिलता है। फिर दोनों के फलों में भिन्न स्वाद कहाँ से आते हैं? नदियों में बाढ़ आने पर पानी गावँ के अन्दर आ जाता है, मगर सागरों और महासागरों में बाढ़ क्यों नहीं आते? कौन उन्हें अपनी सीमाओं का उल्लंघन करने नहीं देता? सर के केश बढ़ते रहते हैं, मगर आँखों के केश क्यों नहीं बढ़ते? उनके लिए नियम कौन बदल देता है? क्या यह सब अपने आप होते हैं?

प्रकृति में चारों ओर एक श्रृंखला दिखाई देती है। जल, स्थल, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह और नक्षत्र सारे व्यवस्थित हैं और एक नियम का पालन करते हुए दिखाई देते हैं। पृथ्वी अपने अक्ष के चारों ओर घंटा प्रति एक हजार मील की गति से घूम रही है। अगर उसकी गति सौ मील प्रति घन्टे होती, तो हमारे दिन और रात वर्त्तमान के दिन और रात की तुलना में दस गुना अधिक दीर्घ होते और सौ घंटों का लगातार तापपान सब कुछ जलाकर भष्म कर देता। प्राणियों का जीवित रहना संभव नहीं होता। इसी प्रकार, सूर्य हम से लगभग १४ करोड ९६ लाख किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है और उसकी ऊपरी सतह का तापमान प्राय ६००० डिग्री सेंटीग्रेड है। यह तापमान पहाड़ों को भी जला कर भस्म कर सकता है। मगर सूर्य हमारी पृथ्वी से एक ऐसी दूरी बनाए हुए चल रहा है जिसके कारण हमें आवश्यकता से अधिक गरमी नहीं पहुंचती। अगर पृथ्वी से सूर्य का व्यवधान दुगना हो जाए तो धरती पर इतना ठंड होगा कि सब कुछ बर्फ बन जाएगा। अगर यह व्यवधान आधा हो जाए, तो धरती का तापमान इतना बढ़ जाएगा कि सारे प्राणी जल कर राख हो जाएंगे। इसी प्रकार, चन्द्र ३ लाख ८५ हजार किलोमीटर की दूरी पर है। अगर यह दूरी आधी हो जाए, तो समन्दरों में इतनी ऊँची लहरें उठेंगी कि सारी धरती डूब जाएगी। महाकाश में परिक्रमा करने

वाले ग्रहों में से केवल एक ग्रह का अपने कक्षा से कुछ पल के लिए हट जाना पृथ्वी का सर्वनाश कर सकता है। इन ग्रहों का युग युगसे अपने निर्धारित कक्ष में संतुलन बनाए हुए चलते रहना क्या केवल एक संयोग है? क्या एक संयोग उन ग्रहों को इस प्रकार अनुशासनबद्ध रख सकता है? गाड़ी का नियमों से चलना चालक के उपस्थिति का प्रमाण है। चालक न हो तो चाल अनियमित होती है। इसी प्रकार, यह सृष्टि जो एक नियम से चल रही है, किसी संचालक की उपस्थिति का प्रमाण देती है। अगर हम इन बातों पर ध्यान दें तो हमें इस अद्भूत अनुशासन के पीछे एक अदृश्य सत्ता कार्य करती हुई साफ दिखाई देगी।

कोई भी वस्तु अपने आप नहीं बनती। वह बनाई जाती है। टेबल हो, कुर्सी हो या मकान हो, किसी के बनाने से बनते हैं। मान लीजिये कि आपने किसी जंगल के अन्दर एक टूटा फूटा पुराना घर देखा। आपने देखा कि उस घर में रहने के लिए हर जरुरी व्यवस्था उपलब्ध है। उस घर में दरवाजे हैं, खिड़कियां हैं, स्नानागार है, कुआँ है, रसोई और शयन कक्ष आदि भी मौजुद हैं। अगर कोई यह कहे कि उस घरका निर्माण संयोग से अपने आप हुआ है, क्या आप उसे मान लेते हैं? आपने उस घर को बनते हुए नहीं देखा, न ही किसी को बनाते हुए देखा। मगर चूँकि घर के निर्माण के पीछे एक लक्ष्य दिखता है और एक योजना दिखती है, आप दृढ़ता से कहते हैं कि उस घर का अवश्य किसीने निर्माण किया है। वह अपने आप नहीं बना है। यहाँ केवल कारण से आप कर्त्ता का अनुमान लगाते हैं। कारण मौजूद हो तो कर्त्ता अवश्य मौजूद होता है। एक योजना के अन्तर्गत बनाया गया घर किसी संयोग का परिणाम नहीं हो सकता। इसी प्रकार पृथ्वी पर मनुष्य को जीवित रखने की यह विश्व-व्यवस्था संयोगिक नहीं है। धरती पर अनाज, फल, सबजी, पानी, हवा, तापमान आदि का सही मात्रा में प्रबन्ध मनुष्य को जीवित रखने के लिए किया गया है और ऐसा प्रबन्ध किसी प्रबन्धक के बिना संभव नहीं है।

किसी साधु से प्रश्न किया गया के आपने ईश्वर को कैसे जाना ? उन्होंने उत्तर दिया -

"मैं ने ईश्वर को एक अंडे से पहचाना। मैं ने देखा कि वह एक सफेद घर है जिसमें न कोई दरवाजा है न खिड़की, न हवा आने जाने का कोई रास्ता है। वह हर तरफ से बन्द है। अचानक घर की दीवार फाड़ कर उसमें से एक जीवित प्राणी निकल आया। बाहर आने के कुछ पलों में ही उस प्राणी ने खाना-पिना, बातें करना और चलना-फिरना आरम्भ कर दिया जिस प्रकार कोई अभिज्ञ प्राणी करता है। ऐसा लगता था जैसे किसी ने उसे सब कुछ सिखाया है। मैं हैरान था कि बाहर से तो कोई अंडे के अन्दर नहीं गया, फिर उस बन्द कमरे के अन्दर मुर्गी का बच्चा जीवित कैसे रहा और यह सारी बातें अंडे के अन्दर उसे बताई किसने? इस घटना से मैं समझ गया कि कोई अवश्य है जिसने अंडे के अंदर यह सब किया है, और वही ईश्वर है।"

मनुष्य के अन्दर ईश्वरीय सत्ता को अनुभब करने की शक्ति मौजूद है। वह उसे देख तो नहीं सकता, परन्तु उसका अस्तित्व अनुभब कर सकता है। साधारण मनुष्य में भी हम दृढ़ ईश्वर-विश्वास पाते हैं। एक बुढ़िया अपने घर के दरवाजे पर बैठी चरखे से सूत काट रही थी। रास्ते से गुजरने वाले एक मुसाफिर ने उस बुढ़िया के पास आकर पुछा -

"मौसी, क्या तुम विश्वास रखती हो की ईश्वर है और वही यह संसार चला रहा है? " बुढ़िया ने उत्तर दिया - "हां रखती हूँ।"

उस व्यक्ति ने फिर प्रश्न किया -

"तुम यह कैसे विश्वास करती हो और किस प्रमाण के आधार पर करती हो?"

अब बुढ़िया अपना चरखा बन्द करके बैठ गई और फिर उस व्यक्ति से पूछा -

"बेटा! मुझे जरा बताना के यह चरखा चल क्यों नहीं रहा है?"

उस व्यक्ति ने कहा- "भला कैसे चल सकता है, तुमने तो उसे बन्द कर रखा है।"

बुढ़िया ने मुस्कुराते हुए कहा -

"बेटा, इतनीसी बात तुम्हारी बुद्धि में कैसे नहीं आती ? अगर यह छोटासा चरखा संचालक के बिना नहीं चल सकता, तो इतना बड़ा ब्रह्माण्ड भला अपने आप कैसे चल सकता है ? उसे भी कोई चलाता है और वही ईश्वर है।"

वह व्यक्ति बुढ़िया की बात सुन कर संतुष्ट हो गया।

बगदाद के एक राजा ने "नास्तिकवाद और आस्तिकवाद" पर एक तर्कसभा का आयोयन किया। दोनो मतवादों के विद्वानों को राजसभा में आमंत्रित किया गया। उस समय इराक में इमाम गजाली नाम के एक विद्वान रहते थे। उन्हें ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण देने के लिए कहा गया। प्रतिपक्ष के विद्वान राजसभा में उपस्थित हो चुके थे, परन्तु पंडित गजाली जी का पता न था। कार्यक्रम में देर होने के कारण राजा नाराज हुए और नास्तिकवाद के समर्थकों ने परिहास किया -

"शायद हमारे ईश्वरभक्त मौलाना साहब हार जाने के डर से नहीं आये।"

अनेक विलंब के बाद पंडित गजाली महोदय ने सभाकक्ष में प्रवेश किया। राजा ने अपना असंतोष व्यक्त करते हुए उन्हें विलंब का कारण पूछा। पंडितजी ने उत्तर दिया -

"महाराज! क्षमा चाहता हूं। रास्ते में एक विचित्र घटना घटी, जिसके कारण मेरे आने में विलंब हुआ।"

राजा ने पूछा - "कैसी घटना ?"

दरबार के सारे लोग भी आग्रह से पंडित गजाली की ओर देखने लगे। इमाम गजाली ने कहा -

"महाराज! ऐसी अद्भुत घटना मैं ने पहले कभी नहीं देखी। मेरे रास्ते पर एक नदी आती है। नदी पार करने के लिए मैं किनारे पर नाव की प्रतीक्षा

कर रहा था। मगर आज एक भी नाव नहीं दिखी। काफी समय तक नाव न मिलने पर दरबार में कैसे पहँचूं यह सोच कर मैं व्यस्त हो गया था। अचानक मैं ने देखा, नदी के अन्दर से लकड़ी के कुछ तख्ते ऊपर आ कर पानी पर तैरने लगे। फिर हथौड़ा निकला और किलें निकलीं और आरा भी निकला। मेरी हैरत और बढ़ गई जब मैं ने देखा कि आरा अपने आप तखतों को चीरने लगा था परन्तु उसे चलाने वाला कोई न था। फिर तखते अपने आप एक दूसरे से जुड़ने लगे और किलें अपने अपने स्थान पर लगती चली गईं और फिर हथौड़ा उन्हें ठोंकने लगा। नदी के अन्दर इस प्रकार का अद्भुत कार्यक्रम कुछ देर तक चलता रहा और धीरे धीरे मेरे आँखों के सामने एक सुन्दर नाव तैयार हो गई। मैं स्तब्ध रह गया था। मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। फिर मैं ने देखा कि वह नाव स्वयं मेरी और बढ़ने लगी और मेरे पास आकर ठहर गई। मुझे भय हुआ कि शायद कोई प्रेत यह सब कर रहा है। फिर मैं ने सोचा, मैं ईश्वर के कार्य के लिए निकला हूँ, शायद वह मेरी सहायता कर रहे हैं। यह मान कर मैं नाव में बैठ गया। अब नाव धीरे धीरे चलने लगी। ऐसा लगता था जैसे कोई कुशल नाविक उसे चला रहा है। कुछ समय बाद वह नाव नदी के उस पार लगी। मैं तुरंत ही उतर गया। मेरे उतर जाने के बाद वह नाव विपरीत दिशा में जाने लगी और धीरे धीरे मेरी आंखों से ओझल हो गई । कुछ समय मैं वहीं खड़ा उसे देखता रहा, फिर दरबार की ओर चल पड़ा। महाराज! यही कारण है कि मुझे दरबार में उपस्थित होने में विलम्ब हुआ। मैं आप से क्षमा चाहता हूँ।"

अपनी बात समाप्त करके इमाम गजाली ने एक गहरी सांस ली।

राजा के साथ सारे दरबारी भी कह उठे -

"यह असम्भव है। एक नाव बीच नदी में अपने आप बन जाती है और बिना नाविक के चल पड़ती है, यह कैसे हो सकता है ?"

प्रतिपक्ष के पंडितों ने परिहास करते हुए टिप्पणी दी -

"पंडितजी का मस्तिष्क शायद काम नहीं कर रहा है, इसलिए पागलों जैसी बातें कर रहे हैं।"

पंडित गजाली ने नम्रता पूर्वक कहा -

"महाराज! क्यों संभव नहीं है? यदि यह धरती, आकाश, ग्रह-नक्षत्र या जीवजगत की रचना किसी रचयिता के बिना संभव है, यदि संचालक के बिना ब्रह्माण्ड का संचालन संभव है, तो एक छोटे से नाव का अपने आप बनना या चलना क्यों संभव नहीं है?"

पंडितजी की बात सुन कर दरबार में उपस्थित सारे लोग खामोश हो गये। कुछ पल बाद राजा ने फैसला सुनाया -

"तर्क समाप्त हुआ, गजालीजी के तर्क में वजन है। हम यह विश्वास करते हैं कि ईश्वर है और यह सृष्टि, स्रष्टा के बिना नहीं हुई है।"

परमेश्वर को देख कर नहीं, देखे बिना मान लेने को धर्म की भाषा में 'भगवद्-विश्वास' या 'इमान–बिल्लाह' कहते हैं। देख कर मान लेने में कोई कमाल नहीं है। इसमें मनुष्य की समझ-बूझ की क्षमता या उसकी बुद्धि की जांच नहीं हो सकती। जब वह एक अदृश्य सत्ता को जानने का प्रयास करता है, तो उसकी बुद्धि की परीक्षा हो जाती है।

ईश्वर को जानना मनुष्य का पहला कर्त्तव्य है और उसे प्राप्त करना उसका परम सौभाग्य है। जिसने हमें मनुष्य बनाया, हमें जीवित रखने का प्रबन्ध किया और जिससे जाकर हमें मिलना है, संपूर्ण जीवन में उसी को पहचान न पाना अवश्य दु:ख की बात है। अगर मनुष्य अपनी बुद्धि का उचित प्रयोग करे, तो वास्तविकता उस से छुप नहीं सकती।

मानव जीवन में भगवत-विश्वास की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह मनुष्य का ईश्वर के साथ एक संबन्ध स्थापित करता है और उसके मन में ईश्वर के लिए प्रेम उत्पन्न करता है जिसे 'श्रद्धा' या 'भक्ति' कहते हैं । भक्ति गभीर होने पर धीरे

धीरे मनुष्य के जीवन में परिवर्त्तन लाना आरम्भ करती है। उसका मन पवित्र होता है, विचार शुद्ध होते और आचरण श्रृंखलित होते हैं । भगवत विश्वास मनुष्य को एक अनुशासन के अन्दर रखता है और स्वेच्छाचारिता से उसे रोकता है।

मन की शान्ति भी भगवत विश्वास से ही मिलती है। ईश्वर स्मरण से मन को ऐसा सुख मिलता है जो किसी विषय-भोग से नहीं मिलता। इंद्रिय प्रबृत्तियों से संघर्ष करने की शक्ति भी आस्तिकता से मिलती है।

जिसका यह मानना हो कि संसार का कोई मालिक नहीं है, न ही मनुष्य के लिए कोई अनुशासन है, उसके आचरण में संयम आसान नहीं है। जो जगत की रचना को बेकार समझता हो, परलोक या पुनर्जीवन को कल्पना समझता हो, ऐसे व्यक्ति को सतकर्म की प्रेरणा मिले तो कहाँ से मिले ? अच्छे कर्मो से उसे किसी अच्छे परिणाम की आशा नहीं होती, न ही बुरे कर्मों के परिणाम का भय रहता है । मन में जवाबदेही का अहसास न हो तो आचरण में संयम संभव नहीं है। एक उदाहरण से हम यह आसानी से समझ सकते हैं।

एक व्यापारी किसी दूर शहर के लिए यात्रा कर रहा था। रास्ते में एक मजदूर से उसकी मुलाकात हो गई । वह भी काम की तलाश में उसी शहर की ओर जा रहा था। दोनों साथ साथ चले और रास्ते में दोनों में दोस्ती भी हो गई । एक वीरान जगह पर अचानक उस व्यापारी के सीने में दर्द होने लगा। रात का समय था। सड़क सुनसान थी। दूर दूर तक कोई नजर नहीं आ रहा था। मजदूर साथी घबरा गया था, मगर कुछ सहायता नहीं कर पा रहा था। व्यापारी का दर्द बढ़ता गया और बेचैन हो कर उसने अपने साथी का हाथ पकड़ कर कहा -

> "भाई! लगता है में अब जीवित नहीं रहूँगा। यदि मेरी मृत्यु हो जाए, तो कृपया मुझ पर एक अहसान करना। मेरे इस थैली में एक लाख रुपये हैं। पत्नी के जेवर बेच कर और कुछ कर्ज ले कर मैं कारोवार के लिए निकला था। अपने घर का पता तुम्हें देता हूँ। मेरे बच्चों के पास यह पैसा पहुँचा देना। अगर यह पैसे उन्हें नहीं मिले तो मेरे बच्चे बरबाद हो जाएंगे। दुनिया में उनका और कोई नहीं है। ईश्वर तुम्हारा भला करेगा।"

घर का पता बताने के साथ साथ उस व्यापारी ने अन्तिम सांस ली। वह मजदूर क्या करे क्या न करे, समझ नहीं पा रहा था। उसने व्यापारी की थैली खोला तो उस में सचमुच एक लाख रुपये थे। उसके मन में दुर्भावना पैदा हुई - "मैं भी तो एक गरीब आदमी हूँ। अपने बच्चों को पेट भर खाना नहीं दे पाता। ऊपर से पत्नी भी बीमार चल रही है। उसका इलाज नहीं कर पा रहा हूँ। यह रुपये मेरे बहुत काम आ सकते हैं। सुनसान जगह है। कोई देखने वाला नहीं। किसी को कुछ पता नहीं चलेगा। यह मौका छोड़ना उचित नहीं होगा।"

ऐसी अवस्था में उस गरीब आदमी के लिए एक लाख रुपये का मोह त्याग देना आसान नहीं है। ऐसी परिस्थिति में विचार किया जाए कि उस मृत व्यापारी की विधवा को उसके अधिकार कैसे मिले? जहाँ पुलिस के हाथ लगने का ड़र नहीं है या सम्मान-हानि की आशंका भी नहीं है, वहाँ मनुष्य को सतकर्म करने के लिए कौन मजबूर कर सकता है? कौन सा विचार उसकी अन्तरात्मा को इनसाफ करने पर विवश कर सकता है? यह केवल ईश्वर-विश्वास के अतिरिक्त और क्या हो सकता है? केवल ईश्वर के प्रति भय रखने वाला व्यक्ति इस प्रकार के प्रलोभन से बच सकता है और न्याय कर सकता है, क्योंकि वह जानता है कि सर्वदर्शी परमेश्वर उस वीरान जंगल में भी उसके साथ हैं और उसके कर्मों को देख रहे हैं। अगर वह बेवा और अनाथों के अधिकार छीनेगा तो वह उसे दण्ड देंगे और अगर वह उनकी अमानत उन तक पहुँचा दे, तो वह अवश्य उस से प्रसन्न होंगे। ऐसा व्यक्ति किसी के प्राण नहीं ले सकता, फरेब से किसी का धन नहीं खा सकता, किसी के सम्मान के साथ खेल नहीं सकता या किसी को कष्ट नहीं दे सकता।

आज हमारे समाज में चारों और अशान्ति फैली हुई है। शान्ति बनाए रखने के लिए हमारे पास योजनाओं की कमी नहीं है। पुलिस है, हथियार है, अदालतें है और जेलखानों की भी कमी नहीं है। अपराध नियन्त्रण करने के लिए आधुनिक उपायों का भी प्रयोग हा रहा है, परन्तु अपराध बढ़ते जा रहे हैं। कारण क्या है? इसका मुख्य कारण है समाज में ईश्वर-चेतना की कमी। मनुष्य ने एक

अटल सच्चाई से मुंह मोड़ लिया है। वह सच्चाई यह है कि उसका एक मालिक है जिसने उसके लिए कुछ नियम दिये हैं जिनके विपरीत करने पर वह उसे दंण्डित करेगा ।

ईश्वर को मानने और न मानने वालों में अंतर होता है । मन में ईश्वर-विश्वास हो तो मनुष्य एकांत में भी पाप नहीं कर पाता और अगर यह विश्वास न हो तो विश्व की कोई भी शक्ति पाप करने से उसे रोक नहीं सकती। ईश्वर-भक्तों के लिए किसी पुलिस या हथियार की आवश्यकता नहीं है। सबसे बडी पुलिस उनके मन में दिन रात बैठी रहती है जो उन्हें अपराध करने से रोकती रहती है।

यह संसार खेल नहीं है । यह एक सुचिंतित योजना है । मनुष्य को अपने अच्छे या बुरे कर्म का परिणाम भुगतना पड़ेगा और कर्मफल प्राप्त करने के लिए उसे मृत्यु के पश्चात् पुनर्जिवित किया जाएगा ।

हमारा मानना या न मानना, हमारी इच्छा पर है, परन्तु सत्य सदा सत्य ही रहता है। हमारे मानने या न मानने से वह बदल नहीं जाता। हाँ, किसी सत्य को उसके विपरीत मानने का नुकसान अवश्य हमें होता है। विचार शुद्ध या सही हों तो कर्म भी सही होते हैं। इसलिए कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय लेने से पहले अच्छी तरह सोच-विचार कर लेनी चाहिए। घटना वास्तव में जैसी हो, उसी प्रकार उसे मान लेना सद्विश्वास है और उसके विपरीत मानना असद्-विश्वास है।

ब्रह्म परिचय

वह पवित्र सत्ता कौन है जिसे लोग ईश्वर, परमात्मा, खुदा, गॉड या अल्लाह् के नाम से पुकारते हैं? वह एक है या अनेक? उसका स्वरूप कैसा है? उसके गुण व स्वभाव कैसे हैं? वह दृश्यमान है या अदृश्य? साकार है या निराकार? हमारे साथ उसका संबन्ध क्या है? उसने हमें पैदा क्यों किया? इस प्रकार अनेक प्रश्न मन में उत्पन्न होते रहते हैं, जिनका उत्तर मनुष्य ढूंढ़ता है धर्मगुरुओं के प्रवचनों में, सामाजिक परम्परा में या फ़िर अपने धर्मग्रन्थों के पन्नों पर। जैसा उत्तर उसे मिलता है, उसकी भगवद्-धारणा वैसी ही बनती है। धर्मग्रन्थों के भाष्यों में विभेद के कारण, प्रक्षेपण या परिवर्तन के कारण या विभिन्न दर्शनों के प्रभाव के कारण, ईश्वरवाद पर अनेक मतवाद उत्पन्न हो गये हैं जो प्राचीन मानव-सभ्यता में नहीं थे। एकेश्वरवाद, बहुदेववाद, द्वैतवाद, अद्वैतवाद, साकारवाद, निराकारवाद, नास्तिकवाद, आस्तिकवाद, शून्यवाद आदि अनेक मतवादों के अन्दर एक साधारण व्यक्ति के लिए अपने स्रष्टा का परिचय रहस्यमय बन कर रह गया है।

मतभेदां के बावजूद विश्व के महान ग्रन्थों में हम बहुत सारी समानताएं देखते हैं। परमेश्वर के गुण, स्वरूप और स्वभाव के विषय में वेद, उपनिषद, बाइबिल, कुरआन, जेन्द-आभेस्ता, गुरुग्रन्थ साहेब आदि ग्रन्थों में लगभग एक ही सिद्धान्त पाया जाता है। इस पुस्तक में हम वेदों और उपनिषदों के साथ कुरआन की समानता पर चर्चा करेंगे।

वेद सनातन धर्म के मूलग्रंथ हैं और विश्व के सब से प्राचीन ग्रंथ माने जाते हैं। वेद का शाब्दिक अर्थ है "ज्ञान"। हजारों वर्ष पहले मानवजाति का मार्गदर्शन करते हुए महर्षि अग्नि, वायु, अंगीरा आदि शताधिक ऋषियों के अन्तर में ईश्वर ने जो ज्ञान प्रकट किया था, उनके संकलन को 'वेद' कहा जाता है। चार वेद हैं - ऋगवेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। प्राचीन समय में वेदों को केवल सुन कर याद रखा जाता था। इसलिए उन्हें "श्रृति" भी कहा जाता है। वेद आर्यों के जीवनदर्शन थे और उनके आध्यात्मिक, सामाजिक और राजनैतिक जीवन में मार्गदर्शन किया करते थे। वेदों से उपनिषद् और दर्शनशास्त्र आदि निकले हैं। वेदज्ञान को सरल तथा स्पष्ट करने के लिए आर्य ऋषियों ने उपनिषदों की रचना

की। वेदों का सार तथा अंतिम भाग होने के कारण उपनिषद् को 'वेदान्त' भी कहा जाता है।

सातवीं शताब्दी में मानवजाति का मार्गदर्शन करते हुए हजरत मुहम्मद के मन में ईश्वर ने जो देववाणी प्रकट किया, उनके संकलन को 'कुरआन' कहा जाता है। २३ वर्ष की अवधि में यह वाणी अरबी भाषा में प्रकट हुई थी। कुरआन शब्द का अर्थ है 'पाठ्य'। यह इसलाम का मूल ग्रंथ है। लिखित रूप में होते हुए भी कुरआन विश्व के लाखों भक्तों की स्मृति में मौजूद है।

वेद और कुरआन दोनों ईश्वरवाणी हैं और दोनों ग्रंथ देववाणी के माध्यम से प्रकट हुए हैं, ऐसा दोनों धर्म के मानने वालों का विश्वास है। जिस प्रकार वेदों के किसी ऋषि ने अपने आपको वेद मन्त्रों का रचयिता होने का दावा नहीं किया, उसी प्रकार कुरआन के ऋषि हजरत मुहम्मद ने भी स्वयं को कुरआन का रचयिता नहीं कहा। उन्होंने कहा कि कुरआन की वाणियाँ उन पर प्रकट हुईं थीं। भाषा में अन्तर होने के बावजूद इसलाम और सनातन धर्मशास्त्रों में ब्रह्मतत्त्व का अपूर्व सादृश्य पाया जाता है।

ईश्वरतत्त्व दिव्यग्रन्थों का सर्वोच्च तत्त्व है और यही धर्म का आधार है। इसलिए मनुष्य को सबसे पहले इसीका ज्ञान दिया जाता है। ईश्वर को जानने के लिए बहुत बड़ा विद्वान होना आवश्यक नहीं है। साधारण ज्ञान इसके लिए पर्याप्त है। मनुष्य के लिए अपने मालिक को जानना आवश्यक वताते हुए उपनिषद् कहते हैं –

> तमीश्वराणां परमं महेश्वरं तं देवतानां परमं च दैवतम् ।
> पतिं पतिनां परमं परस्ताद् विदाम देवं भुवनेशमीड्यम् ।।
>
> (श्वेताश्वतरोपनिषद् : ६:७)

> "हमें उस ज्ञानातीत आराध्य जगदीश्वर को जानना चाहिए जो प्रभुओं का प्रभु, देवों का देव और शासकों का सर्वोच्च शासक है।"[1]

[1] May we realize Him – the transcendent and adorable Master of the universe – who is the Supreme Lord over all the lords, the Supreme God above all the gods and the Supreme Ruler over all the rulers. (Sweta 6/7, Swami Tyagisananda, Sri Ramkkrishna Matha, Madras)

सृष्टि, स्थिति और विनाश का कारण

ब्रह्म का परिचय प्रदान करते हुए उपनिषद **कहते** हैं –

> **यतो वा** इमानि भूतानि जायन्ते, **येन** जातानि जीवन्ति ।
> यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तद्विजिज्ञासस्व तद् ब्रह्मेति ।।
>
> (तैत्तिरीयोपनिषद :३/१)

"जिससे सारे जीव उत्पन्न हुए हैं, जिसके द्वारा वे जीवित रहते हैं और अन्त में जाकर जिससे मिलते हैं, तुम उसे जानने की इच्छा करो, वह ब्रह्म है।"(2)

इसी प्रकार ईश्वर का परिचय कराते हुए वेद कहते हैं -

> **यो** मारयति प्राणयति यस्मात् प्राणन्ति भुवनानि विश्वा।
>
> (अथर्ववेद : १३.३.३)

"**जिससे सभी** मनुष्य प्राणशक्ति प्राप्त करते हैं, जिसकी क्षीणता से मृत्यु होती है तथा जिनके सामर्थ्य से सभी प्राणी जीवन व्यापार (श्वास-प्रश्वास) चलाते हैं।" (अनुवाद : पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य) (3)

वेद यहाँ कहते हैं कि जो **मारता है, प्राण** संचार करता है और जिसकी कृपा से सारे **प्राणी जीवित रहते हैं, वह ईश्वर** है। अल्लाह का परिचय देते हुए कुरआन वही कहता है –

اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ

---

(2) That out of which all these creatures are born, being born by which they live, (and again) having departed into which they enter, seek to know That. That is Brahman. (Taittiriya Upanishad 3/1, Swami Sarvananda, Ramakrishna Math, Madras)

(3) He who takes life away, he who bestows it; from whom comes breath to every living creature, This God, etc. (Atharva Veda, 13.3.3, Ralph T.H. Griffith, [1895])

"अल्लाह वही है, जिसने तुम्हें पैदा किया, तुम्हें आहार देता है फिर वह तुम्हें मृत्यु देगा और फिर पुनर्जीवित करेगा।"

(कुरआन : ३०/४०)

दोनो धर्मग्रन्थों में एक विशेष सत्ता को "ब्रह्म" या "अल्लाह" कहा गया है जो संसार की उत्पत्ति, स्थिति और विनाश का कारण है।

सब का मालिक

वह सब का मालिक है। यह धरती, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह, नक्षत्र, जीव, देव या मानव – सब एक ईश्वर की रचना हैं और वही सब का पालन करता है तथा सर्वेश्वर है। उपनिषद कहते हैं –

एष सर्वेश्वर एष सर्वज्ञ (मांडुक्योपनिषद : ६)।

"वह सबका मालिक है और सर्वज्ञ है।" [4]

वेद कहते हैं –

विश्वस्य भुवनस्य राजा: (ऋगवेद : ६.३६.४)

"वह समग्र ब्रह्मांड का अधीश्वर है।" [5]

वेद यह भी कहते हैं -

दिव्यो गन्धर्वो भुवनस्य यस्पतिरेक एव नमस्यो विक्ष्वीड्य:

(अथर्ववेद, २.२:१)

"जो दिव्य, गन्ध्र्व, पृथ्वी आदि लोकों को धारण करने वाले एक मात्र स्वामी हैं, वे ही इस संसार में नमस्य हैं।'

(अनुवाद : प. श्रीराम शर्मा आचार्य)

कुरआन भी अल्लाह को सर्वलोकेश्वर कहता है –

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

---

[4] He is the Lord of all, the Omniscient. (Mandukya Upanishad 6)

[5] Of all the worlds thou art the only Sovran.(Rig Veda, 6.36.4, Ralph T.H. Griffith)

अल्-हम्दु लिल्लाहि रब-बिल् आलमीन् ।

"सब स्तुतियाँ तमाम लोकों के स्वामी अल्लाह के लिए हैं ।"

(कुरआन : १/१)

ब्रह्मसूत्र

संपूर्ण वैदिक भक्तिमार्ग एक ईश्वर की निष्ठा पर आधारित है। सनातन धर्म में ब्रह्मज्ञान का पहला सूत्र है ब्रह्मसूत्र। यह वैदिक धर्म का मूलमन्त्र है –

एकम् ब्रह्म द्वितियो नास्ति: - अर्थात ईश्वर एक है, दूसरा नहीं है।

वेद और उपनिषदों में परमेश्वर को एक कहा गया है। वेद कहते हैं –

यो देवेष्यधि देव एक आसीत् । (ऋगवेद :१०.१२१.०८)

"सब देवों का वह एक देव है और उसके अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं है।" (6)

उपनिषद कहते हैं -

एको हि रुद्रो न द्वितीयाय तस्थुर्य । (श्वेताश्वतरोपनिषद ६:७)

"अपनी शक्ति से सृष्टि को वश में रखने वाला ईश्वर केवल एक ही है, उसके अतिरिक्त दूसरा ईश्वर कोई नहीं है।"(7)

श्वेताश्वतरोपनिषद में अनेक मंत्र हैं जो वैदिक धर्म के एकेश्वरवाद को सिद्ध करते हैं। उदाहरण के लिए –

१. ईशते देव एक: (१.१०)

२. कालात्मयुक्तान्यधितिष्ठत्येक: (१/३)

---

(6) He is the God of gods and none besides Him. (Rig Veda 10.121.8, Ralph T.H. Griffith)

(7) He who protects and controls the worlds by His own powers, He - Rudra – is indeed one only. There is no one besides Him who can make Him the second. (Sweta : 6/7)

३. एषो ह देव: प्रदिशोऽनु सर्वा: (२.१६)

४. एको हि रुद्रो न द्वितियाय तस्थु:(३.२)

५. द्यावाभूमी जनयन् देव एक: (३.३)

६. दिवि तिष्ठत्येक: (३.९)

७. य एकोऽबर्णो (४.१)

८. यो योनिं योनिमधितिष्ठत्येक: (४.११)

९. एको देव: सर्वभूतेषु गुढ़: (६.११)

१०.एको हंस: भुवनस्यास्य मध्ये (६.१५)

इसी प्रकार कुरआन कहता है –

وَاِلٰـهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ

व इलाहुकुम् इलाहुँ वाहिद्

"तुम्हारा ईश्वर एक ही ईश्वर है।" (कुरआन २/१६३))

जिस प्रकार किसी देश के दो शासक नहीं होते, किसी विद्यालय के दो प्रधानाचार्य नहीं होते, उसी प्रकार जगत के एकाधिक अधीश्वर नहीं हैं। ऐसा होने पर अनुशासनहीनता स्वाभाविक है। यह विशाल विश्व जिस अनुशासन का पालन करता है, वह केवल एक ही मुख्य होने पर संभव है। इस लिए कुरआन ने तर्क रखा है -

لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا

लउ काना फि-हिमा आलिहतुन् इल्ल-ल्लाहु लफसदता।

"यदि आसमान और जमीन में अल्लाह के अतिरिक्त और ईश्वर भी होते, तो वे अस्त-व्यस्त हो जाते।" (कुरआन २१/२२)

ईश्वर एक – नाम अनेक

ईश्वर को विभिन्न भाषाओं में विभिन्न नामों से पुकारा जाता है। सभी धर्म के लोग ऐसा करते हैं। मुसलमान भी 'अल्लाह' नाम के अतिरिक्त खुदा, रब, परवरदिगार, मालिक या मौला आदि अनेक नामों से अपने प्रभुको संबोधित करते हैं। परमेश्वर के गुणों को प्रकाश करने के लिए अनेक नामों का प्रयोग होता है। प्रत्येक नाम उनका एक विशेष गुण प्रकाश करता है। स्रष्टा होने के कारण उन्हें ब्रह्मा, प्रजापिता या विश्वकर्मा कहा जाता है। पालन पोषण करने के कारण उन्हें विष्णु कहा जाता है। इसी प्रकार, प्रभु और नियन्त्रक होने के कारण उन्हें ईश्वर, कर्मफल-दाता होने के कारण विधाता, जगत के स्वामी होने के कारण जगदीश्वर या सर्वेश्वर, जगत को धारण करने हेतु धरणीधर, संहारकर्त्ता होने के कारण महेश्वर भी कहा जाता है। यह सब उसी एक ईश्वर के अलग अलग माम मात्र हैं। ऐसे ही गुण प्रकाश करने वाले नाम अरबी भाषा में भी हैं। कर्म व गुण के अनुसार अनेक नामों से उन्हें बुलाया जाता है। इंद्र, मित्र, वरुण, अग्नि भी एक ईश्वर के भिन्न भिन्न नाम हैं। तभी वेद कहे हैं –

> इंद्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गुरुत्मान् ।
> एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातारिश्वानमाहुः ।।
>
> (ऋगवेद : १.१६४.४६)

"एक ही सत्‌रूप परमेश्वर का विद्वज्जन (विभिन्न गुणों एवं स्वरूपों के आधार पर) विविध प्रकार से वर्णन करते हैं। उसी (परमात्मा) को (ऐश्वर्य सम्पन्न होने पर) इन्द्र, (हितकारी होने से) मित्र, (श्रेष्ठ होने से) वरुण तथा (प्रकाशक होने से) अग्नि कहा गया है। वह (परमात्मा) भली प्रकार पालन कर्त्ता होने से सूपर्ण तथा गरुत्मान् है।" (अनुवाद : पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य) [8]

---

[8] They call Him Indra, Mitra, Varuna, Agni and He is heavenly nobly-winged Garutman. To what is One, sages give many a title they call it Agni, Yama, Matarisvan. (Rig Veda, 1.164.46, Ralph T.H. Griffith)

इसका समर्थन करते हुए कुरआन कहता है –

قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ۗ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا
فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ

"कह दो, अल्लाह नाम से पुकारो या दयामय नाम से, जिस नाम से भी पुकारो, उसके अच्छे अच्छे नाम हैं।"

(कुरआन १७/११०)

ब्रह्म की विशेषताएं

परमेश्वर विविध स्वभाव और शक्तियों का स्वामी है। उसकी विशेषताएं भी अनुपम हैं। दिव्यग्रन्थों में ईश्वर को पहचानने के कुछ सूत्र बताए जाते हैं । वह उसके विशेष गुण, कर्म और स्वभाव हैं। नाम से उसे पहचानना आसान नहीं है क्योंकि विभिन्न भाषाऔं में उसके नाम अलग अलग होते हैं। पार्सी धर्मग्रंथ जेन्द-आभेस्ता में ईश्वर को 'आहुरा-मजदा' और हिब्रू बाइबिल में 'यहोवा' कहा गया है। संस्कृत भाषा में परमेश्वर के लिए 'ब्रह्म' और अरबी भाषा में 'अल्लाह्' शब्द का उपयोग हुआ है। वेदों में अगर हम 'अल्लाह' शब्द ढूंढेंगे तो वह नहीं मिलेगा, क्यौंकि वेदों की भाषा संस्कृत है। कुरआन में 'ब्रह्म' शब्द नहीं मिलेगा क्यों की कुरआन की भाषा अरबी है। हां, अगर उसके गुण व स्वभाव की सहायता से तलाश किया जाए, तो वह तीनों ग्रन्थों में अवश्य मिल जाता है। परमेश्वर अपने गुण, कर्म व स्वभाव में भी अद्वितीय और अतुलनीय है। आइऐ, उस पवित्र सत्ताके कुछ विशेष गुणों की चर्चा करते हैं जो इसलाम और सनातन धर्म में एक समान हैं।

जन्म-रहित

इसलाम और सनातन धर्म के शास्त्रों में यह मान्यता है कि ईश्वर जन्म और मृत्यु से परे है। उपनिषदों में परमेश्वर को अजः अर्थात अजन्मा कहा गया है।

यदात्मतत्त्वेन तु ब्रह्मतत्त्वं दीपोपमेनेह युक्तः प्रपश्येत् ।
अजं धृवं सर्वतत्त्वै र्विशुद्धं ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्वपापैः ।।

(श्वेताश्वतरोपनिषद् : २/१५)

"जब योगी आत्मा के प्रत्यक्ष ज्ञान से ब्रह्म की वास्तवता को महसूस करता है तो उस दिव्य सत्ता को जन्म रहित, नित्य तथा पवित्र जान कर वह सब पापों से मुक्त होता है।"[9]

---

[9] When the yogin realizes the truth of Brahman, through the perception of the truth of Atman in this body as a self luminous entity, then knowing the Divinity as unborn, eternal and free from all the modifications of prakrti, he is freed from all sins. (Sweta : 2/15, Swami Sarvananda, Ramakrishna Matha, Mysore, Madras, 1920)

अन्य एक स्थान पर उपनिषद के ऋषि कहते हैं कि वह अविनाशी व अनादि परमेश्वर सर्वव्यापक है और ब्रह्मज्ञानी उसे नित्य तथा जन्म-रहित जानते हैं। श्लोक इस प्रकार है –

वेदाहमेतमजरं पुराणं सर्वात्मानं सर्वगतं विभुत्वात् ।
जन्मनिरोधं प्रवदन्ति यस्य ब्रह्मवादिनो हि प्रवदन्ति नित्यत् ।।[10]
(श्वेताश्वतरोपनिषद् : ३/२१)

माता पिता नहीं

जन्म न लेने के कारण ईश्वर के माता पिता नहीं होते। उस का कोई कर्त्ता न होने के कारण उसे 'स्वयंभू' भी कहा गया है। उपनिषद में कहा गया –

न चास्य कश्चिज्जनिता न चाधिप: (श्वेताश्वतरोपनिषद् : ६/९)
"उसके माता पिता नहीं है न उसका कोई प्रभु है।" [11]

कुरआन इस सत्य का समर्थन करते हुए कहता है –

لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ

लम् यलिद् व लम् युलद्।
"किसी ने उससे जन्म नहीं लिया न ही किसी ने उसे जन्म दिया है।" (कुरआन ११२/३)

अविनाशी

सृष्टि अनित्य और विनाशशील है। जिसकी उत्पत्ति हुई है, उसका विनाश निश्चित है। परन्तु, ईश्वर जन्म रहित होने के कारण नित्य और अविनाशी है। इसी कारण उपनिषद में परमेश्वर को "अक्षर" अर्थात अविनाशी कहा गया है –

---

[10] I know this undecaying primeval Immanent self of all, who is omnipresent because of His all-pervasiveness, and whom the expounders of Brahman declare to be eternally free from birth. (Sweta : 3/21)

[11] He has no parent, nor is there anyone who is His lord.(Sweta : 6/1)

क्षरं प्रधानममृताक्षरं हर: क्षरात्मानावीशते देव एक:

(श्वेताश्वतरोपनिषद् : १/१०)

"वस्तु नश्वर है, परन्तु ईश्वर अविनश्वर और अमर है। केवल वही एक ईश्वर समस्त नश्वर वस्तुओं तथा जीवात्माओं पर हुकुमत करता है।"(12)

यही बात कुरआन ने भी अपनी भाषा में कही है –

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهِ

व तवक्-कल् अलल् हय्-यिल् लजी ला यमुतु व सब्-बिह् बिहम्दिह ।

"और भरोसा रखो उस जीवित सत्ता पर जो मरता नहीं, और स्तुति के साथ उसके गुणगान करते रहो" (कुरआन : २५/५८)

अनादि व अनन्त

ईश्वर सृष्टि से पहले भी था और उसके अन्त हो जानेके बाद भी विद्यमान रहेगा। उपनिषद कहते हैं –

य एको जालवानीशत ईशनीभि: सर्वाल्लोकानीशत ईशनीभि: ।
य एवैक उद्भवे सम्भवे च, य एतद् विदुरमृतास्ते भवन्ति।।

(श्वेताश्वतरोपनिषद् : ३/१)

"जो सृष्टि के प्रारम्भ में विद्यमान था और सृष्टि के अंत पर भी विद्यमान रहेगा, जो बहुविध शक्तियों का स्वामी है, एक मात्र वही दिव्य प्रभु अपनी रहस्यमयी शक्ति से जगत की रक्षा करता है और उस में कार्य करने वाली शक्तियों को नियन्त्रित करता है। ऐसे ब्रह्म को जानने वाले लोग अमर हो जाते हैं।" (13)

---

(12) Matter is perishable, but God is imperishable and immortal. He, the only God, rules over the perishable matter and individual souls. (Sweta : 1/10)

(13) It is the self-same One who exists alone at the time of creation and dissolution of the universe, that assumes manifold powers and appears as the Divine Lord by virtue of His inscrutable power of Maya. He it is that protects all the worlds and controls all the various forces working therein. Those who realize this Being become immortal. (Sweta : 3/1)

कुरआन भी अल्लाह को अनादि व अनन्त कहता है —

هُوَ الْاَوَّلُ وَ الْاٰخِرُ وَ الظَّاهِرُ وَ الْبَاطِنُ

हुअल् अव-वलु वल् आखिरु वज्-जाहिरु वल् वातिन् ।

"वह आद्य है और वही अंत है, और वह जाहिर है और वही छुपा हुआ भी है।" (कुरआन : ५७/३)

धारणकर्त्ता

परमेश्वर ने जगत का धारण किया है और उसे संभाले हुए है। इसी कारण उसे 'धरणीधर' भी कहा जाता है। उपनिषद कहते हैं —

व्यक्ताव्यक्तं भरते विश्वमीशः (श्वेताश्वतरोपनिषद् : १/८)

"ईश्वर प्रकाश्य और अप्रकाश्य जगत को धारण करता है।"(14)

इस तत्त्व का भी समर्थन करते हुए कुरआन कहता है —

تَقُوْمَ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ

तकुमस-समा'उ वल् अरदु बिअमरिही।

"उसी की आज्ञा से धरती और आकाश अवस्थापित हैं।"

(कुरआन ३०/२५)

और एक स्थान पर कहा गया है -

هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ

हुअल् हय्युल्-कय्युम्

"वह जीवित है और (सारे जगत का) धारण करनेवाला है।"

(कुरआन २/२५५)

---

(14) The Lord supports this universe which consists of a combination of the perishable and the impersiable, the manifest and the unmanifest. (Swete : 1/8)

सर्वज्ञ और सर्वद्रष्टा

संसार में ऐसी घटना नहीं होती जिस का ज्ञान ईश्वर को नहीं होता। वह सब देखता है और सब सुनता है। इसी कारण उपनिषदों मे उसे विश्वतश्चक्षु कहा गया है -

विश्वतश्चक्षुरूत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरूत विश्वतस्पात् ।
सं बाहुभ्यां धमति संपतत्रैर्धावाभूमी जनयन् देव एकः ।।
(श्वेताश्वतरोपनिषद् : ३/३)

"ईश्वर की आँखे, मुख, हाथ और पाँव हर तरफ हैं। वह मनुष्य को हाथ, पक्षी को पंख और मनुष्य को पाँव प्रदान करता है, वह धरती और आकाश का स्रष्टा और उनका अद्वितीय प्रकाशक है।" (15)

ऐसी ही बात कुरआन में भी कही गई है –

وَ لِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَ الْمَغْرِبُ فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ

वलिल्लाहिल् मश्रिकु वल् मगरिवु फ अइनमा तुवल्लु फसम्मा वजहुल्लाह

"पूरब और पश्चिम सब अल्लाह का है, जिस दिशा में भी तुम मुड़ोगे उधर अल्लाह का चेहरा है।" (कुरआन २/११५)

वेद कहते हैं –

यस्तिष्ठति चरति यश्च वञ्चति यो निलायं चरति यः प्रतङ्कम् ।
द्वौ संनिषद्य यन्मन्त्रयेते राजा तद् वेद वरूणस्तृतीयः ।।
(अथर्ववेद : ४/१६/२)

---

(15) His eyes are everywhere, His faces everywhere, His arms everywhere, everywhere His feet. He it is who endows men with arms, birds with feet and wings and men likewise with feet. Having produced heaven and earth, He remains as their non—dual manifester. (Sweta : 3/3, The Upanishads, Swami Nikhilananda)

"जो स्थित रहता है, जो चलता है, जो गुप्त अथवा खुला व्यवहार करता है तथा जब दो मनुष्य एक साथ बैठ कर गुप्त विचार-विमर्श करते है, तब उनमें तीसरे (उनसे भिन्न) हो कर राजा वरुणदेव उन सबको जानते हैं।" (अनुवाद: पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य)

ठीक इसी अन्दाज में कुरआन अल्लाह के सर्वधर्शी स्वभाव का वर्णन करते हुए कहता है –

مَا يَكُونُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ
وَلَا خَمْسَةٍ اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ

"तीन व्यक्तियों के गुप्त आलोचना के समय चौथा अल्लाह् उनके साथ होता है, और पांच व्यक्तियों के गुप्त मंत्रणा के समय छठ्ठा अल्लाह होता है।" (कुरआन: ५८/७)

अन्तर्यामी

उपनिषद में ईश्वर को अन्तर्यामी कहा गया है –

एष सर्वेश्वर एष सर्वज्ञ एषोन्तर्याम्येष योनि:
सर्वास्य प्रभावाप्ययौ हि भूतानाम् ।

(मण्डुक्योपनिषद् : ६)

"वह सब का स्वामी, सर्वज्ञ तथा अन्तर्यामी है, सबके उत्पत्ति, स्थिति और विलय का कारण है।"[16]

कुरआन ने भी इस का समर्थन करते हुए कहा है –

اِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ
عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۳۸﴾

(16) (He is the Lord of all, the omniscient, the Controller and indweller of all, the origin and dissolution of all beings and the cause of all (existence). (Mandukya/6)

"अवश्य अल्लाह जमीन और आसमानों की सारी छुपी हुई बातें जानता है। वह तो मन की बातें भी जानता है।"

(कुरआन : ३५/३८)

दोनों ग्रंथ ईश्वर को सर्वज्ञ, सर्वदर्शी और अन्तर्यामी कहते हैं

सर्वव्यापी

परमेश्वर की सर्वव्यापकता का वर्णन करते हुए उपनिषद कहते हैं -

सर्वत: पाणिपादं तत् सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्।
सर्वत: शृतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ।।

(श्वेताश्वतरोपनिषद् : ३/१६)

"उसके के हाथ और पाँव हर तरफ हैं, उसकी आँखें, उसके कान और मस्तक हर दिशा में हैं और ब्रह्माण्ड की सारी वस्तुऔं को उसने घेर रखा है।"(17)

कुरआन अल्लाह की सर्वव्यापकता का वर्णन करते हुए कहता है –

وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ

"उसकी हुकुमत जमीन और आसमानों को घेरे हुए है।

(कुरआन : २/२५५)

उपनिषद कहते हैं -

एषो ह देव: प्रदिशोऽनु सर्वा: (श्वेताश्वतरोपनिषद् :२.१६)

"वह ईश्वर सभी दिशा में परिव्याप्त है।" (18)

---

(17) Its hands and feet are everywhere, its eyes and head are everywhere, its ears are everywhere, it stands encompassing all in the world. (Sweta : 3/16 - Sacred Books of the East, The Upanishads, Vol.XV, , F. Max Muller, Oxford, London, 1884, p.244)

(18) This Divinity pervades all directions in their entirety. (Sweta : 2/16)

कुरआन कहता है -

إِنَّ ٱللَّهَ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ

इन्नल्लाहा वासिउन् अलीम्

"अल्लाह सर्वव्यापी और सर्वज्ञ है।" (कुरआन : २/११५)

सर्वशक्तिमान

सर्वशक्तिमान उसे कहते हैं जो सब कुछ करने की शक्ति रखता हो। जो विविध शक्तियों का स्वामी हो, उत्पत्ति पालन और संहार कर सकता हो और सब की रक्षा कर सकता हो, कर्म के लिए प्राणी को पुरष्कृत या दंडित कर सकता हो। सारे जीव सीमित शक्ति रखते हैं, केवल वही अनंत शक्ती का स्वामी है। वैदिक शास्त्रों में उसे सर्वशक्तिमान कहा गया है। उपनिषद कहते हैं –

एको हि रुद्रो न द्वितीयाय तस्थुर्य
इमाँल्लोकानीशत ईशनीभिः।।

(श्वेताश्वतरोपनिषद् : ३:२)

"अपनी शक्ति से सृष्टि को वश में रखने वाला ईश्वर केवल एक ही है, उसके अतिरिक्त दूसरा ईश्वर कोई नहीं है।"[19]

पुनश्च यह भी कहा गया है –

नान्यो हेतुर्विद्यत ईशनाय । (श्वेताश्वतरोपनिषद् : ६/१७)

"ईश्वर के अतिरिक्त जगत पर शासन करने के लिए कोई और समर्थ नहीं है।" [20]

---

[19] He who protects and controls the worlds by His own powers, He – Rudra – is indeed one only. There is no one besides Him who can make Him the second. (Sweta : 3/2)

[20] None else is there efficient to govern the world eternally. (Sweta : 6/17)

कुरआन ने भी इस सत्य का समर्थन करते हुए अल्लाह को सर्वशक्तिमान कहा है -

وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْقَدِيْرُ

व हुअल् अलिमुल् कदीर्

"वह सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है।" (कुरआन : ३०/५४)

संरक्षक

परमेश्वर अपनी सृष्टि की रक्षा करता है। सनातन शास्त्र में उसे 'गोप्ता' अर्थात् रक्षक कहा गया है। कुरआन अरबी भषा में उसे 'हाफिज' कहता है। संकट के समय में केवल वही मनुष्य का संकट मोचन करता है। यह बात उपनिषद में स्पष्ट कही गई है -

स एव काले भुवनस्य गोप्ता। (श्वेताश्वतरोपनिषद् : ४/१५)

"एक मात्र वही समय पर सृष्टि की रक्षा करता है।" (21)

कुरआन कहता है कि अल्लाह सबका रक्षक है -

اِنَّ رَبِّىْ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ حَفِيْظٌ

इन्ना रब्बि अला कुल्लि शैइन् हफिज्

"वास्तव में मेरा प्रभु सबका रक्षक है।" (कुरआन : ११/५७)

इसी प्रकार यह भी कहा गया–

وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ ۚ وَ لَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا

"उसकी हुकुमत जमीन व आसमानों को घेरे हुए है और वह थकता नहीं उनकी रक्षा करने से ।" (कुरआन : २/२५५)

---

(21) He alone is the Protector of the world at the proper time. (Sweta : 4/15)

जगद्-ज्योति

ब्रह्म एक ज्योतिर्मय सत्ता है। पृथ्वीलोक में मानव उसे देखने में सक्षम नहीं है। कुरआन में उसे "जमीन व आसमान का नुर" अर्थात्, "ब्रह्मांड-ज्योति" कहा गया है –

اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

"अल्लाहु नुरुस्-समावाति वल् अर्द

"अल्लाह जमीन और आसमानों का प्रकाश है।"

(कुरआन: २४/३५)

इसी प्रकार उपनिषदों में भी ब्रह्म को एक प्रकाश कहा गया -

महान् प्रभुर्वे पुरुष:स्त्वस्यैष प्रवर्तक:
शुनिर्मलामिमां प्राप्तिमीशानो ज्योतिरव्यय: ।। (श्वेता : ३/१२)

"वह महान शक्तिमान प्रभु है। वह अमर-ज्योति हर वस्तु को वश में रखता है और मोक्ष प्राप्ति के लिए प्राणियों का मार्गदर्शन करता है।"[22]

अदृश्य

ईश्वर के स्वरूप के विषय में आर्य ऋषियों ने मानव समाज को जो संदेश दिये हैं वह आज भी हमारे प्राचीन शास्त्रों के पन्नों पर उपलब्ध हैं। केनोपनिषद में कहा गया है कि –

यच्चक्षुषा न पश्यति येन चक्षुंषि पष्यन्ति
तदैव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते । (केनोपनिषद् १/६)

---

[22] This Self is indeed the Mighty Lord. He is the imperishable (internal) light that controls everything. He guides the intellect of all beings so as to enable them to gain that extremely pure state (of Mukti). (Sweta : 3/12)

"जिसे आँखों से नहीं देखा जा सकता, परंतु जिसकी सहायता से आँखें देखने में सक्षम होती हैं, एक मात्र उसी को ब्रह्म जानो, परन्तु उसे नहीं जिसकी लोग यहाँ उपासना करते हैं।"(23)

और यह भी कहते हैं :

न संदृशे तिष्ठति रूपमस्य न चक्षुषा पश्यति कश्चनैनम् ।

(श्वेताश्वतरोपनिषद् : ४/२०)

"उसका रूप इंद्रियों से परे है और उसे आँखों से कोई नहीं देख सकता।" (24)

कुरआन ने भी इस का समर्थन करते हुए कहा है –

لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ

ला तुद्रिकुहुल् अबसार्

"आँखें उसे पा नहीं सकतीं।" (कुरआन : ६/१०३)

अरूप

मुंडक उपनिषद कहते हैं कि परमेश्वर मूर्तिमान नहीं है –

दिव्यो ह्यमूर्तः पुरुषः सवाह्याभ्यन्तरो ह्यजः।(मुण्डकोपनिषद् : २/१/२)

"वह दिप्तिमान सत्ता अवश्य अमूर्त है, अन्दर और बाहर विद्यमान तथा जन्म-रहित है।"(25)

---

(23) What none can see with the eyes, but by which one sees the function of the eyes, know that alone as Brahman and not this which people here worship. (Kena Upanishad : 1/6, Swami Sarvananda)

(24) His form does not stand within the range of the senses. No one perceives Him with the eye. (Sweta : 4/20)

(25) (But) that efflugent Being is verily formless, existing both within a without, uncreated (Mundaka Upanishad : 2/1/2, Swami Sarvananda, Sri Ramkrishna Matha, Madras)

श्वेताश्वतरउपनिषद में उसे आकार-रहित कहा गया है :

ततो यदुत्तरतरं तदरूपमनामयम्
य एतद्विदुरमृतास्ते भवन्ति अथेतरे दु:खमेवापियन्ति ।१०।

(श्वेताश्वतरोपनिषद् : ३/१०)

"वह ईश्वर संसार से परे है, निराकार तथा शोक-मुक्त है। जो उसे जान लेते हैं, वे अमर हो जाते हैं, परन्तु शेष लोगों को अवश्य दु:ख भोगना पड़ता है।"[26]

यजुर्वेद में कहा गया —

न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद् यश: । (यजुर्वेद : ३२/३)

"जिसका नाम और यश अत्यन्त बड़ा है, परन्तु उसका कोई प्रतिमान नहीं है।" (अनुवाद : पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य)

उपनिषद् कहते हैं —

नैनमूर्ध्वं न तिर्यञ्चं न मध्ये परिजग्रभत् ।
न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद् यश: ।।

(श्वेताश्वतरोपनिषद् : ४/१९)

"(परमेश्वर इतना बड़ा और अनन्त है कि) उसे ऊपरसे, इधर-उधरसे अथवा मध्य में कोई भी छू नहीं सकता। उसके समान कोई नहीं है, जिसका नाम अत्यन्त महिमायुक्त है।" [27]

---

[26] That Being is far beyond this world, is formless and free from misery. They who know this become immortal. But all others have indeed to suffer misery alone. (Sweta : 3/10, Swami Tyagisananda, Sri Ramkrishna Matha)

[27] No one can grasp Him above, or across, or in the middle. There is none equal to Him whose name is great glory.

Note - 2. None equal – The word Pratima (here translated as 'equal') does not refer to any images, as is interpreted by some who are not in favour of image worship; according to them the passage means 'There is no image of Him." The true meaning of it, however, is that He has no equal. (Sweta : 4/19, Swami Tyagisananda)

यहाँ पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने वेद मन्त्र में "न तस्य प्रतिमा अस्ति" का अर्थ "उसका कोई प्रतिमान नहीं है" लिया है और स्वामी त्यागीसानन्द जी ने उपनिषद में "उसके समान कोई नहीं है" अर्थ लिया है। निराकारवाद में विश्वास रखने वाले भाष्यकार 'प्रतिमा" का अर्थ आकृती या आकार लेते हैं। 'प्रतिमा" शब्द का अर्थ 'समान" लिया जाए या 'आकृती" लिया जाए, दोनों स्थिति में ईश्वर अदृश्य और अचिन्त्य रहता है, जिस के रूप की कल्पना संभव नहीं है।

केनोपनिषद् में भी ईश्वर का ऐसा ही स्वरूप बताया गया है। उपनिषद् स्पष्ट कहते हैं "यद् वाचानभ्युदितं" (जिसे शब्दों द्वारा प्रकाश नहीं किया जा सकता, केनोपनिषद् १/४), "यन्मनसा न मनुते" (जिसे मन के द्वारा समझा नहीं जा सकता, १/५), "यच्चक्षुषा न पश्यति" (जिसे आँखों से देखा नहीं जा सकता, १/६)। कुरआन उस पवित्र सत्ता के विषय में वही कहता है :

لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ

लइसा कमिश्लिहि शइउन्

"उसके जेसा कुछ भी नहीं है।" (कुरआन ४२/११)

अनुपम

वेद और कुरआन दोनों में परमेश्वर को अनुपम कहा गया है। ऋगवेद कहते हैं –

पतिर्बभूथासमो जनानमेको विश्वस्य भूवनस्य राजा ।

(ऋगवेद: ६/३६/४)

(हे ईश्वर) तुम लोगों के स्वामी हो, जगत के एक मात्र अधीश्वर, तुमहारे समान कोई नहीं है। (28)

(28) For thou art the Lord of men, without an equal: of all the world thou art the only Sovran. (Rig Veda : 6.36.4, Ralph T.H. Griffith)

उपनिषद कहते हैं –

न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते। (श्वेताश्वतरोपनिषद् : ६/८)

"उस परमेश्वर के समान या उससे बड़ा कोई दीखता नहीं।" (29)

कुरआन ने इस सत्य का समर्थन करते हुए ईश्वर को उपमा-रहित कहा है –

وَلَمْ يَكُنْ لَّهُ كُفُوًا اَحَدٌ

वलम् यकुल्लहु कुफुअन् अहद्

"उसके समान कोई नहीं है।" (कुरआन : ११२/४)

इस में संदेह नहीं है कि परमेश्वर अदृश्य और अनुपम है। यही कारण है कि कुरआन में उस अनुपम सत्ता को उपमा देने से मना किया गया। कुरआन कहता है -

فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ

फला तदरिबु लिल्लाहिल् अमशाल्

"तो तुम अल्लाह के लिए उपमा न बनाओ।" (कुरआन : १६/७४)

'ब्रह्म' और 'अल्लाह' अभिन्न

इस परिचर्चा से हमें यह मालुम हुआ कि वेद और कुरआन का ईश्वर एक और अभिन्न है। वह जगत की सृष्टि, स्थिति और विनाश का कारण है । वह सर्वज्ञ, सर्वद्रष्टा, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, संरक्षक, अनादि, अनन्त, अन्तर्यामी, अजन्मा, अविनाशी, अदृश्य और अनुपम है। उसी अदृश्य सत्ता को वेद और उपनिषद 'ब्रह्म' कहते हैं और कुरआन में उसे 'अल्लाह' कहा गया है। जिस में यह सभी गुण न हों, वह 'ब्रह्म' या 'अल्लाह' नहीं है। आइये, अब देखते हैं कि 'उपासना' किसे कहते हैं।

---

(29) No one is seen equal or superior to Him. (Sweta : 6/8)

उपासना

ईश्वरप्राप्ति हम सब का लक्ष्य है। ईश्वर की प्राप्ति, इहलोक और परलोक के सुख के अतिरिक्त कुछ और मनुष्य के जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं है। इसी कारण मनुष्य सदियों से ईश्वर की तलाश में लगा हुआ है और उसे प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है। अपनी समझ के आधार पर जिसे उचित लगा, उसे उसने उपास्य मान लिया है । अपने उपास्य की आराधना के लिए उसने उपासना पीठ भी बनाए। हो सकता है कि एक गावं में पाठशाला, अस्पताल या दवाखाना न हो, मगर मन्दिर, मसजिद या गिरजाघर न हो, ऐसा गावं मुश्किल से मिलेगा। कई गावं में पानी के लिए दूर जाना पड़ता है या इलाज के लिए शहर में जाना पड़ता है, मगर पूजा के लिए कहीं जाना नहीं पड़ता। पूजाघर गावं में ही होता है। यहाँ तक कि घर के अन्दर भी उपासना कक्ष होता है । इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि शिक्षा, इलाज या पानी की तुलना में उपासना का महत्व मनुष्य के लिए कितना अधिक है।

क्या हम ने कभी यह सोचा है कि मनुष्य उपासना क्यों करता है? गरीब भी करता है और अमीर भी। राजा महाराजा भी किसी के सामने सर झुकाते हैं। प्रश्न यह उठता है कि मनुष्य को उपासना की आवश्यकता क्यों पड़ती है? कौन सी बात है जो उसे किसी के शरण में जाने के लिए विवश करती है? अगर हम ध्यान दें तो मालुम होगा कि इसके पीछे मनुष्य की आवश्यकताएं है। उसके जीवन में ऐसी समस्याएं भी उत्पन्न होती हैं जिनका समाधान उसके वश में नहीं होता। वह अनुभव करता है कि जीवन का एक बड़ा क्षेत्र उसके अधीन नहीं है, बल्कि किसी और के नियन्त्रण में है। उसे लगता है कि जन्म, मृत्यु, बुढ़ापा, रोग, संकट या असफलता आदि को जैसे किसी ने उस पर लाद दिया है। सफलता के लिए प्रयास करने पर भी वह असफल रह जाता है। लाभ के लिए कारोबार करता है, मगर नुकसान हो जाता है। पुत्र सन्तान की कामना करता है, परन्तु

कन्या जन्म लेती है। बीमारी नहीं चाहता मगर बीमार हो जाता है। शान्ति चाहता है, परन्तु अशान्ति उसे घेर लेती है। आपदों से भागता है, मगर वे उसका पीछा करते रहते हैं। मौत से वह डरता है, परन्तु मौत उसे पकड़ लेती है। केवल इतना ही नहीं, कभी हिंस्र जानवरों का डर, कभी भुख का भय, तो कभी दुर्घटना की आशंका उसके साथ लगी रहती है। कभी तूफान, कभी सैलाब, कभी भूकम्प उसके मन में भय संचार करते रहते हैं। शंकाओं से घिरा हुआ मनुष्य अपनी सुरक्षा के लिए बेचैन हो कर इन सब के कर्त्ता को ढूंढता है जो उसकी सहायता करे। यह मनुष्य की स्वाभाविक आवश्यकताएं हैं जो किसी के शरण में जाने के लिए उसे विवश करती हैं। फिर वह उसे पाने का मार्ग ढुंढता है।

सदियों से मनुष्य एक या अनेक शक्तियों को प्रसन्न करने का प्रयास करता आ रहा है। अपने उपास्य के लिए वह कुछ विशेष कर्म करता है जिन्हें 'उपासना' कहते हैं। वह उसकी स्तुति करता है, उसके नाम का जप करता है, भजन-कीर्त्तन करता है, उसे साष्टांग प्रणाम करता है, उससे प्रर्थना करता है, संकट में उसे पुकारता है, शरण में जा कर उससे सहायता मांगता है, उसके लिए उपवास पालन करता है, भूखा प्यासा रहता है, दान खैरात करता है, बलि चढ़ाता है, नैवेद्य अर्पण करता है, तीर्थयात्रा पर जाता है, मनोकामना पूरी करने के लिए उससे मन्नतें मांगता है, उसे प्राप्त करने के लिए ध्यान या तपस्या करता है, इंद्रियों से संघर्ष करता है, दास की तरह उसकी सेवा करता है और आवश्यक होने पर अपने प्राण भी दे देता है। भक्त के इन आचरणों को धर्म की भाषा में 'उपासना' कहते हैं। किसी को ईश्वर या परित्राता मान कर उसकी प्रसन्नता के लिए किये गये सारे कर्म 'उपासना' हैं। अरबी भाषा में इन्हें 'इबादत्' कहा जाता है। ये परमेश्वर के अखंडित अधिकार हैं। उपनिषद कहते हैं –

यो देवानामधिपो यस्मिन्ल्लोका अधिश्रिता:
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पद: कस्मै देवाय हविषा विधेम ।

(श्वेताश्वतरोपनिषद्: ४/१३)

"चलो हम सभी देवों के स्वामी उस आनन्दमय दिव्य सत्ता को समर्पित हो कर उनकी उपासना करें जो द्विपद और चतुस्पद प्राणियों पर प्रभुत्व करते हैं और जगत को संभाले हुए हैं।"(30)

इस मन्त्र के अनुवादक स्वामी त्यागीसानन्द जी (श्री रामकृष्ण मठ, मद्रास) साकारवाद के समर्थक होते हुए भी अपनी टिप्पणी में यह स्वीकार करते हैं कि उपासना केवल एक ईश्वर का अधिकार है, यद्यपि वेदों के अनुसार उसे भिन्न भिन्न नामों से संबोधित किया जाता है। (30) कुरआन के स्रष्टाने भी इस सत्य का समर्थन करते हुए कहा है –

إِنَّ هَٰذِهِۦٓ أُمَّتُكُمۡ أُمَّةٗ وَٰحِدَةٗ وَأَنَا۠ رَبُّكُمۡ فَٱعۡبُدُونِ ۝٩٢

"तुमलोगों का यह भ्रातृत्व एक ही भ्रातृत्व है और मैं तुम्हारा पालनहार हूँ, तो तुम मेरी ही उपासना करो।"

(कुरआन : २१/९२)

मनुष्य की जितनी भी आवश्यकताएं हैं, सबका खजाना केवल एक के पास है। यदि वह दे दे तो कोई रोक नहीं सकता और यदि वह न दे तो कोई दिला नहीं सकता। उस पर किसी का जोर नहीं है जेसा कि उपनिषद के ऋषि कहते हैं -

न तस्य कश्चित पतिरस्ति लोके
न चेशिता नैव च तस्य लिङ्गम् ।
स कारणं करणाधिपाधिपो
न चास्य कश्चिज्जनिता न चाधिप: ।। (श्वेताश्वतरोपनिषद् : ६/९)

(30) Let us offer our worship with oblations to that blissful Divine Being who is the lord of the Devas, who governs the bipeds and the quadrupeds and in whom the worlds rest. (Notes : This shows that all worship is due only to the one God, although He may be called by different names as is done in the Vedas.) (Sweta 4/13)

"संसार में कोई उसका स्वामी नहीं है, न ही उस पर किसीका वश चलता है। उसका कोई चिह्न नहीं है। वह सब कारणों का कारण और सबका स्वामी है। किसी ने उसे जन्म नहीं दिया, न ही उसका कोई मालिक है।"(31)

धरती से लेकर आकाश तक सब उसके सामने विवश हैं। यदि वह पैदा करे तो पैदा होते हैं, जीवित रखे तो जिन्दा रहते हैं और यदि मार दे तो मरने पर मजबूर होते हैं। उसके अतिरिक्त किसी में इतनी शक्ति नहीं है कि वह मनुष्य का संकट दूर कर सके या उसकी आव्श्यकता पूरी कर सके? ईश्वर होने के लिए कितनी शक्ति की आवश्यकता है यह बताते हुए कुरआन कहता है

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ وَلَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا ﴿٣﴾

"और लोगों ने उसके अतिरिक्त ऐसे उपास्य बनाए हैं जो कुछ भी पैदा नहीं कर सकते, वह स्वयं पैदा किये जाते हैं और अपने भले या बूरे पर भी उनका कुच्छ अधिकार नहीं है, न ही जीवन, मृत्यु और पुनर्जीवन पर उनका कुछ दखल है।" (कुरआन : २५/३)

मित्रो! एक अनाज का दाना प्रस्तुत करने की शक्ति संसार में किसी और की नहीं है। क्या आप जानते हैं कि अनाज कैसे प्रस्तुत होता है? जमीन पर बीज डालने के बाद, मिट्टी उसे खाद्य देती है, सूर्य उताप देता है और बादल पानी देते हैं। इस प्रकार मिट्टि काम करती है, पानी काम करता है, हवा काम करती है, बादल काम करते हैं, सूरज काम करता है और सागर भी काम करते हैं। इतने

(31) No one in the world is His master, nor has anybody any control over Him. There is no sign by which He can be inferred. He is the cause of all, and the Ruler of individual souls. He has no parent, nor is there anyone who is His lord. (Sweta 6/9)

सारे कार्यक्रमों के बाद हमें अनाज मिलता है। यदि इन में से कोई एक भी अपना काम न करे, तो अनाज प्रस्तुत नहीं हो सकता। इसका अर्थ हुआ कि एक अनाज के दाने को प्रस्तुत करने के लिए उतनी शक्ति की आवश्यकता है जितनि शक्ति धरती, आकाश, हवा, पानी, सूर्य और समन्दरों आदि को वश में रखने के लिए आवश्यक है और वह केवल संसार के स्वामी के पास ही है। इसी कारण उसके भक्त केवल उसी को पुकारते हैं और उसी से सहायता मांगते हैं। वेद कहते हैं :

य एक इद् धव्यश्चर्षणीतामिन्द्रं तं गीर्भिरभ्यर्च आभिः।
यः पत्यते वृषभोः वृष्णावान्तसत्यः सत्वा पुरूमायः सहस्वान्।।
(ऋगदेद : ६.२२.१)

"इन वाणियों द्वारा मैं उस परमेश्वर के गुणगान करता हूँ जो सर्वशक्तिमान, पराक्रमी, सत्यस्वरूप, सर्वज्ञ है तथा नश्वर जगत द्वारा आह्वान-योग्य एक मात्र प्रभु है।"(32)

वह सदा अपने भक्तों के निकट होता है और उनकी प्रार्थना सुनता है। कुरआन में ईश्वर कहते हैं –

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ
دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ

"और जब मेरे भक्त तुमसे मेरे संबन्ध में प्रश्न करें, तो मैं उनके बहुत निकट हूँ और जब भी कोई मुझसे प्रार्थना करता है, मैं उसकी प्रार्थना सुनता हूँ ।" (कुरआन : २/१८६)

एक स्वामी को समर्पित होने का आनंद अनुभवी ही जानते हैं। जिस दास का एक ही मालिक होता है, उसकी अवस्था उस दास से बेहतर होती है जिसके मालिक अनेक हैं। एकाधिक प्रभुओं को समर्पित होना और सबको प्रसन्न करना

(32) With these hymns I glorify that Indra who is alone to be invoked by mortals, the Lord, the Mighty one, of manly vigor, victorious, Hero, true and full of wisdom. (Rig Ved, 6.22.1, Griffith)

मनुष्य के लिए एक अस्वाभाविक स्थिति होती है। एक ईश्वर की उपकारीता पर एक सुंदर उदाहरण देते हुए कुरआन कहता है –

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيْهِ شُرَكَآءُ مُتَشٰكِسُوْنَ
وَ رَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ؕ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۚ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

"अल्लाह दृष्टांत देता है कि एक व्यक्ति के कई मालिक हैं जो आपस में भिन्न भिन्न विचार रखते हैं और एक ऐसा व्यक्ति है जो पूरा का पूरा एक मालिक का दास है, क्या इन दोनों की दशा समान है ? सारी स्तुति अल्लाह के लिए है, परंतु उनमें अधिकतर लोग जानते नहीं।" (कुरआन : ३९/२९)

इसलाम के अनुसार, साधु, संत, ऋषी, मुनि, ईशदूत या देवदूत – सभी आदरणीय हैं, परन्तु कोई मनुष्य का उपास्य नहीं है। सब ईश्वर के सेवक हैं परन्तु कोई उसके ब्रह्मत्व में हिस्सेदार नहीं है। अत: यह तर्कसंगत है कि जिसने हमें पैदा नहीं किया, जिसकी कृपा से हम जीवित नहीं हैं और जो हमारा भाग्य-विधाता नहीं है, वह हमारी सेवा का अधिकारी भी नहीं है। यही कारण है कि किसी और को ईश्वर या परित्राता मान कर उसकी प्रसन्नता के लिए किये जाने वाले सारे कर्म इसलाम में निषिद्ध हैं ।

भक्त और भगवान में अन्तर है। उदाहरण के लिए, अगर कोई कहता है कि हजरत मुहम्मद ईश्वर या अल्लाह हैं, तो उसकी बातों की हम जांच करेंगे । हम यह देखेंगे कि जिसे ईश्वर माना गया, क्या उनके वह सब गुण हैं जो ईश्वर या अल्लाह के हैं? ईश्वर जन्म-रहित है, क्या हजरत मुहम्मद जन्म-रहित हैं? हम जानते हैं कि उन्हों ने अरब देश के मक्का शहर में जन्म लिया और उनके माता पिता भी थे। अल्लाह अविनाशी है परन्तु, हजरत मुहम्मद ने शरीर त्याग किया है। इसी प्रकार वह सर्वज्ञ या सर्वद्रष्टा नहीं थे। वह अन्तर्यामी भी नहीं थे। उनका

ज्ञान अल्लाह की तरह अनंत या सर्वव्यापक नहीं था। वह सर्वशक्तिमान नहीं थे। अपने कार्य के लिए उन्हें दूसरों पर निर्भर भी करना पड़ता था। वह संसार के रक्षक या जीवों के पालनकर्त्ता नहीं थे। अपनी शक्ति से अपनी रक्षा नहीं कर सकते थे या संकट से बच नहीं सकते थे। अपनी बीमारी वह स्वयं दूर नहीं कर पाते थे। इसके लिए वह अल्लाह से प्रार्थना करते। वह खाते थे, पीते थे और सोते भी थे। वह शोक-मुक्त न थे या अनादि या अनन्त न थे। ब्रह्म या अल्लाह अदृश्य है। परन्तु, हजरत मुहमम्द का रूप था। वह भक्त थे, परन्तु भगवान न थे। सृष्टि थे परन्तु स्रष्टा न थे। ईश्वरदूत थे परन्तु ईश्वर न थे। उपासक थे परन्तु उपास्य न थे। इस लिए उनकी उपासना नहीं की जा सकती। अल्लाह की अशेष कृपा हो हजरत मुहम्मद पर। एक मुसलमान उनसे बहुत प्रेम करता है, उनका सम्मान करता है, उनकी आज्ञा पर अपना प्राण दे सकता है, परन्तु वह उनकी उपासना नहीं करता। वह उसकी उपासना करता है जिसकी उपासना स्वयं हजरत मुहम्मद किया करते थे।

निराकारवाद

निराकारवाद का प्रचलन केवल मुसलमानों में नहीं, बल्कि यहुदी, सिख, इसाई और हिन्दू संप्रदाय में भी है। प्राचीन वैदिक समय में केवल एकेश्वरवाद का प्रचलन था। इतिहास से मालुम होता है कि आर्य ऋषि निराकार ब्रह्म की उपासना करते थे। वैदिक आश्रमों में एकेश्वरवाद का प्रचलन था और शिक्षा समाप्त होने के बाद शिष्यों को यह उपदेश दिया जाता था कि ईश्वर के संबन्ध में सही ज्ञान उपनिषादों से ही प्राप्त करना उनका श्रेष्ठ कर्त्तव्य है। (दि हिस्ट्री ऑफ इन्डिया, पृ. ७३-७४)[33]

वैदिक युग के अनेक समय बाद सनातन धर्म में प्रतीक उपासना का प्रवेश हुआ। साधारण भक्तों के लिए निराकार ईश्वर की परिकल्पना कठिन मान कर प्रतीक उपासना का प्रारम्भ हुआ। प्राथमिक अवस्था में भक्त के मन में एकाग्रता लाना इसका उद्देश्य था, परन्तु धीरे धीरे यह धर्म का एक महत्वपूर्ण अंग बन गया। हिन्दू संस्कृति में साकारवाद और निराकारवाद, दोनों को मान्यता प्रदान की गई है।

भारत में अठारवीं सदी में राजा राम मोहन राय और उन्नीसवीं सदी में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने निराकारबाद का प्रचार किया। इस समय भी भारत में कई हिन्दू समुदायों में निराकारबाद का प्रचलन है। आर्य समाज, ब्राह्म समाज, प्रार्थना समाज, नाथ संप्रदाय, रामस्नेही संप्रदाय, सतनामी संप्रदाय, लिंगायत संप्रदाय, गुरु रामदास के अनुयायी, सन्त ज्ञानेश्वर, आचार्य मणिक्कवाचकर के भक्त, सन्त तुकाराम का संप्रदाय, सन्त प्राणनाथ संप्रदाय, सन्त रणदास, सन्त राइचरण दास, महिमा स्वामी का अलेख संप्रदाय आदि समुदायों में निराकार ईश्वर की उपासना की जाती है ।

---

[33] The doctrine of Monotheism prevails throughout the Institutes ; and it is declared towards the close that, of all duties, " the principal is to obtain from the Upanishad a true knowledge of one supreme God." (The History of India, p.73-74)

कुरआन कहता है कि सारे ईशदूतों को एक ईश्वर की उपासना करने का आदेश दिया गया था —

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ
اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ﴿٢٥﴾

"और तुमसे पहले हम ने कोई संदेशवाहक नहीं भेजा है जिसकी ओर हमने यह देववाणी न की हो कि मेरे अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, अतः तुम मेरी उपासना करो।" (कुरआन २१/२५)

हम देखते हैं कि बाइबिल ने भी एकेश्वरवाद का प्रचार किया है । ईश्वर का मुख्य आदेश क्या है यह बताते हुए माननीय यीशु कहते हैं :-

"प्रभु, हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है।"

(बाइबिल, मरकुस : १२/२९)

बाइबिल में हमें ईश्वर के निराकार होने के भी प्रमाण मिलते हें जिन में से कुछ इस प्रकार हैं -

"तुम मेरे साथ किसि को सम्मिलित न करना, अर्थात्, अपने लिये चाँदी वा सोने से देवताओं को न गढ़ लेना।''

(बाइबिल, निर्गमन : २०-२३)

"कहीं ऐसा न हो कि तुम बिगड़ कर चाहे पुरुष चाहे स्त्री के, चाहे पृथ्वी पर चलने वाले किसी पशु, चाहे आकाश में उड़ने वाले किसी पक्षी के, चाहे भूमी पर रेंगने वाले किसी जन्तु, चाहे पृथ्वी के जल में रहने वाली किसी मछली के रूप की कोई मूर्त्ति खोद कर बना लो।" (व्यवस्थाविवरण : ४:१६-१८)

माननीय मोसेस् को दस विशेष आदेश दिये गये थे जो "टेन् कमान्डमेन्टस्" के नाम से मशहूर हैं। उनमें ईश्वर का प्रथम आदेश यह था —

"तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना। तु अपने लिए कोई मूर्त्ति खोद कर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में वा पृथ्वी पर वा पृथ्वी के जल में हैं। तू उनको दंडबत् न करना और न उनकी उपासना करना क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोबा जलन रखने वाला ईश्वर हूँ ।" (निर्गमन : २०:३-५)

ईसाई धर्म में निराकार ईश्वर की उपासना होती है और ट्रिनिटी तत्त्व का भी प्रचलन है। इस तत्त्व के अनुसार ईश्वर पिता हैं, यीशु पुत्र हैं और देवदूत पवित्र आत्मा हैं और यह तिनों भिन्न भिन्न होते हुए भी एक और अभिन्न हैं। "ट्रिनिटी" शब्द बाइबिल में नहीं है। एन्साइक्लोपिडिया ब्रिटानिका इस संबन्ध में लिखता है कि ट्रिनिटी शब्द या ट्रिनिटी मतवाद बाइबिल के नूतन नियम में नहीं है और यीशु या उनके शिष्यों ने पुरातन नियम के एकेश्वरवाद का विरोध करना नहीं चाहा था। ब्रिटानिका पुनश्च लिखता है कि कई सदिऔं तक अनेक विवादों के बीच धीरे धीरे ट्रिनिटी मतवाद का विकाश हुआ।[34]

लगभग वैसे ही विचार आलभान लामसन ने अपनी पुस्तक "द चर्च अफ द फर्ष्ट थ्री सेनचुरीज्" में प्रकट किया है।''[35]

इतिहास से मालुम होता है कि ईशदूत यीशु के समय में ट्रिनिटी मतवाद का अस्तित्व नहीं था। यह मतवाद माननीय यीशु के लगभग तीन सौ वर्ष बाद

---

[34] Trinity, Encyclopedia Britannica, Ultimate Reference Suite, Chicago, 2011 : "Neither the word trinity nor the explicit doctrine appears in the New Testament nor did Jesus and his followers intend to contradict the 'Shema' in the Hebrew Scriptures—"Hear, O Israel, The Lord, our Lord, is one Lord. (Deutronomy 6 : 4)"... The doctrine developed gradually over several centuries and through many controversies."

[35] The Church of the First Three Centuries, Alvan Lamson, DD, Boston, 1860, p.34 : "In consistency with the view we maintain that the doctrine of Trinity was of gradual and comparatively late formation, that it had its origin in a source entirly foreign from that of the Jewish and Christian scriptures; that is grew up and ingrafted on Christianity through the hands of the Platonizing fathers."

पैदा हुआ। सन् ३ २ ५ ईसवी में सम्राट कनष्टानटाइन् की अध्यक्षता में हुई काउंसिल अफ नाइस् में अनेक वितर्क के बाद यह मतवाद स्वीकार लिया गया था और सन् ३८१ में कनष्टान्टिनोपल काउंसिल् ने उसे अन्तिम रूप दिया था। उसी समय से रोम के शासकों ने यह निर्णय लिया कि जो इसाई ट्रिनिटी तत्त्व पर विश्वास न रखें या एक ईश्वर में तीन ईश्वर को न मानें, उन्हें दंड दिया जाएगा। [36]

ऐतिहासिक एडवार्ड गीबन इस विषय में कहते हैं –

> "ट्रिनिटी या अवतारबाद का रहस्य एकेश्वरवाद के सिद्धान्त का विरोधी लगता है। उन्होंने स्पष्ट रूप से तीन बराबर के उपास्यों की शुरुआत की और मानव यीशु को ईश्वरपुत्र में बदल दिया।"[37]

जन डाभेनपोर्ट लिखते हैं कि गीवन, निउटन और परसन आदि विशिष्ट विद्वानों ने ट्रिनिटी को प्रक्षेप माना है । [38]

---

[36] A History of the Origin of the Doctrine of the Trinity in the Christian Church, Hugh H. Stannus, London, 1882, p.1 : "The origin and development of the doctrine of Triune Diety in the Church is clearly traced to Platonic and other influences during the third and fourth centuries. Its introduction caused considerable discussion, agitation and strife during the period named. The Council of Nice (AD 325) voted in favour of the Diety of Christ; the Council of Constantinople (AD 381) fixed the doctrine of the Trinity. From that time, the Roman Emperors resolved and proclaimed, they would punish all Christians who would not believe in and worship three persons in one God."

[37] Life of Mahommed, Edward, Gibbon, London : "The mystries of the Trinity and incarnation appear to contradict the principle of divine unity. In their obvious sense they introduced three equal dities and transformed the man Jesus into the substance of the Son of God...." (p.75)

[38] An apology for Mohammed and the Koran, John Davenport, London, 1869 p.74 : "The celebrated text of three witnesses (John i.v.7) which is the foundation of the docrine of Trinity has been proved by the labours of Newton, Gibbon, Person and other to have been an interpolation and calmet himself acknowledges that this verse is not found in any ancient copy of the Bible. Jesus taught the belief of one God, but Paul with the Apostle John, who was a Platonist, despoiled Christ's religion of all its unity and simplicity; by introducing the incomprehensible Trinity of Plato...."

विशिष्ट वैज्ञानिक सार् आइजाक् निउटन माननीय यीशु को मनुष्य और ईश्वर-प्रतिनिधि मानते थे। सुन्दर तर्क उपस्थापित करते हुए निउटन कहते हैं –

> "केवल एक ही ईश्वर है जो पिता है, सदा जीवित, सर्वव्यापी, सर्वदर्शी, सर्वशक्तिमान, धरती व आकाश का स्रष्टा है, ईश्वर और मानव के बीच एक ही मध्यस्थ - मानव यीशु। पिता अदृश्य ईश्वर है जिसे किसी आँख ने नहीं देखा न ही देख सकती है। दूसरी चीजें कभी न कभी दृश्यमान होती हैं। सारी उपासना (स्तुति, प्रार्थना या प्रशंसा) जो यीशु के आने से पहले पिता के अधिकार थे, वे अब भी उन्हीं के अधिकार हैं। यीशु पिता की उपासना घटाने के लिऐ नहीं आए थे।"(39)

बाइबिल में जितने ईश्वरदूतों का वर्णन है, उनमें से किसी ने भी स्वयं को ईश्वर नहीं कहा है। यीशु स्वयं कहते हैं कि वह ईश्वर के द्वारा भेजे गये थे –

> "मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता, जैसा सुनता हूँ, वैसा न्याय करता हूँ और मेरा न्याय सच्चा है, क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजनेवाले की इच्छा चाहता हूँ।" (युहन्ना :५.३०)

बाइबिल में कई स्थानों पर माननीय यीशु को प्रफेट् यानी पैगम्बर कहा गया है।(40)

---

(39) Sir Isaac Newton : "There is one God, the Father, ever living, Omnipresent, Omniscent, Almighty, the maker of heaven and earth and one Mediator between God and men—the man Christ Jesus. The Father is the invisible God, Whom no eye hath seen or can see. All other being are sometimes visible. All the worship (whether praise or prayer or thanks giving) which was due to the father before the coming of Christ, is still due to Him. Christ came not to diminish the worship of his father." (Ibid.p.29)

(40) "This is Jesus, the **Prophet** of Nazareth in Galilee." (Mathew 21 : 11) "After the people saw the miraculous sign that Jesus did, they began to say, "Surely this **is** the **Prophet** which to come into the world." (John 6 : 14). "They were all filled with awe and praised God 'a great **Prophet** has appeared among us' (Luke 7 : 16). "About Jesus Nazareth they replied 'He was a **Prophet** powerful in world and deed before God and all the people." (Luke 24 : 19) "On hearing his words some of the people says ' Surely this man is the **Prophet**" (John 7 : 40)

सभी धर्मप्रबर्त्तक मानव होते हैं और उन पर देववाणी होती है, यह स्पष्ट करते हुए बाइबिल ने कहा है –

> "क्यों कि कोई भी भविषद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की और से बोलते थे।" (२ पतरस १:२१)

इस बात का समर्थन करते हुए कुरआन कहता है।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ
مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى

> "और तुमसे पहले हम जिनको भेजते थे, वे भी गावं में बसने वाले पुरुष थे, जिन पर हम देववाणी किया करते थे।"

(कुरआन १२: १०९)

कुरआन के अनुसार माननीय ईश्वर-प्रतिनिधि मानव हैं। वे खाते है, पीते हैं, सोते हैं और अपना घर-संसार करते हैं। वे अपने ईश्वर की उपासना भी करते हैं। उन महापुरुषों के असाधारण व्यक्तित्व तथा अलौकिक कर्मों के कारण बाद के समय में उन्हें ईश्वर मान लिया जाता है। वे स्वयं को ईश्वर सिद्ध करने के लिए चमत्कार प्रदर्शन नहीं करते, बल्कि ईश्वर-प्रतिनिधित्व सिद्ध करने के लिए ऐसा करते हैं जिस से लोगों में उनके प्रति आस्था होती है और लोग उनकी आज्ञा मानते हैं।

ईश्वर और मानव के स्वभाव विपरीत हैं। मानव जन्म लेता है परन्तु परमेश्वर जन्म-रहित हैं। मानव मरता है, परन्तु ईश्वर नित्य व अविनाशी हैं। मानव का प्रारम्भ है और अन्त भी है, परन्तु ईश्वर सृष्टि से पहले भी थे और प्रलय के पश्चात भी रहेंगे। मानव को आहार, निद्रा और मैथुन आदि कि आवश्यकता होती है, परन्तु ईश्वर इन आवश्यकताओं से परे हैं। मानव दूसरे की सहायता के बिना जीवित नहीं रह सकता, परन्तु ईश्वर को किसी सहायता की आवश्यकता नहीं है। मानव अल्पज्ञ है, ईश्वर सर्बज्ञ हैं, मानव की शक्ति सीमित है परन्तु ईश्वर की

शक्ति असीमित है। मानव का रूप है, परन्तु ईश्वर दृश्यमान नहीं हैं। भूल करना, भूल जाना, जन्म लेना, मरना, यह सब मानवीय गुण हैं। कोई मानव होते हुए भी ईश्वर है, जन्म लेकर भी जन्म-रहित है, मृत्यु भोग करते हुए भी अविनाशी है, अल्पज्ञ भी है और सर्बज्ञ भी, साकार भी और निराकार भी है, दोनों विपरीत बातें एक ही समय में संभव नहीं है। इसलिए कुरआन उपदेश देता है कि केवल अदृश्य स्रष्टा की उपासना की जाए । वेद कहते हैं कि ईश्वर के अतिरिक्त किसी औरकी स्तुति न करो ताकि तुम्हें दु:ख न पहुँचे –

मा चिदन्यद्वि शंसत सखायो मा रिषण्यत ।
इन्द्रमित्स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुरुक्था च शंसत।।[41]

(ऋगवेद : ८.१.१)

उपनिषद् कहते हैं कि अपने परमेश्वर को न जानना मनुष्य के लिए संकट का कारण बन सकता है -

इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति
न चेदिह्यवेदीन् महती विनष्टिः । (केनोपनिषद : ३/५)

"यदि मनुष्य इस जीवन में उसे जान ले तो अच्छा है, परन्तु यदि वह उसे यहाँ न जाने तो उसके लिए महा विपति है।" [42]

कुरआन कहता है कि भक्त के दूसरे पाप क्षमा किये जा सकते हैं, परन्तु ईश्वर के स्थान पर किसी और की सेवा-उपासना क्षमा योग्य नहीं है -

إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِۦ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ
لِمَن يَشَآءُ

---

[41] Glorify naught besides, O friends, so shall no sorrow trouble you. Praise only Mighty Indra when the juice is shed, and say your lauds repeatedly. (Rig Veda 8.1.1)

[42] If a man knows Him in this life, then well and good, if he does not know Him here, then it is a great calamity. (Kena : 3/5)

"अल्लाह यह क्षमा नहीं करता कि उसका सहभागी बनाया जाए, और इसके अतिरिक्त (अन्य पापों के लिये) जिसे चाहे वह क्षमा कर देता है।" (कुरआन : ४/११६)

कुरआन के इस सिद्धान्त के पीछे यह तर्क मालूम होता है कि उपासना केवल पालनकर्त्ता के अधिकार होने के कारण अन्य को वह स्थान देना उनका निरादर है तथा उनके प्रति अविचार है। एक राजा अपनी प्रजा के सारे अपराध क्षमा कर सकता है, परन्तु राजद्रोह का अपराध क्षमा नहीं करता। यदि किसी सेवक को उसका स्थान दिया जाए तो राजा इसे राजद्रोह का अपराध मानता है। इसी प्रकार एक पति अपने पत्नी के कई दोष क्षमा कर सकता है, लेकिन अगर पत्नी किसी और को पति का अधिकार दे कर उसे पति का सहभागी बनाए, तो वह कितनी भी सुन्दर, शुशील या गुणवती हो, पति उसे क्षमा नहीं कर पाता। पत्नी की बर्षों की सेवा उसके लिए महत्वहीन हो जाती है। इसी प्रकार, यदि मनुष्य अपने प्रभु के अधिकार किसी और को प्रदान करे, तो कुरआन उसे ईश्वरद्रोह मानता है।

ईश्वरशरण

भागवत में नवधा भक्ति का वर्णन इस प्रकार हुआ है –

श्रबणं कीर्त्तनं विष्णु स्मरणं पादसेवनम्,
अर्च्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम् ।

अर्थात, परमेश्वर का नाम सुनना, जपना, स्मरण करना, उनकी सेवा-उपासना करना, उनकी वन्दना-अर्चना करना, उनके प्रति दास्य व सख्यभाव रखना तथा स्वयं को उन्हें समर्पित कर देना भक्ति कहलाता है। भगवद् गीता में श्रीकृष्ण जी अर्जुन से कहते हैं –

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत ।
तद्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्यसि शाश्वतम् ।।

(भगवद् गीता : १८/६२)

"हे अर्जुन! तुम सब प्रकार से ईश्वर की शरण में जाऔ। उसकी कृपा से तुम परम शांति को तथा सनातन परम धाम को प्राप्त होगे ।" [43]

इसी सत्य को माननीय यीशु बाइबिल में कहते हैं –

"स्वयं को ईश्वर को समर्पित करो।" (जेम्स : ४:७)[44]

और इसी सत्य को प्रकाश करते हुए हजरत मुहम्मद कहते हैं –

"संपूर्ण समर्पित आत्मा के अतिरिक्त कोई स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता।" (तिरमिजी : २५४७)

---

[43] Just surrender solely unto Him, completely in every way. O Arjun, by His grace you will receive transcendental peace and the eternal abode. (Bhagbad Gita : 18:62)

[44] Submit yourselves, therefore, to God. (James, 4:7)

हम ने देखा कि ईश्वरशरण मानब-सभ्यता का प्राचीन धार्मिक परंपरा है। स्वयं को पूर्ण रूप से ईश्वर को समर्पित कर देना या अपनी इच्छा का त्याग कर के प्रभु की इच्छा का पालन करना 'समर्पण' कहलाता है। धर्म केवल एक आस्था का नाम नहीं है। आस्था पर आधारित यह एक जीवन मार्ग है। एक सच्चा भक्त केवल ईश्वर की पूजा नहीं करता, बल्कि जीवन के सभी क्षेत्रों में वह उसकी आज्ञा का पालन भी करता है। भक्ति भावना के साथ-साथ वह दास्य भावना भी रखता है। यही ईश्वर के प्रति भक्त का समर्पण है। केवल पूजा-अर्चना करना मगर उसके विधान की परवाह न करना धार्मिकता नहीं है।

पूजा-उपासना से ईश्वर अवश्य प्रसन्न होता है, परंतु उसे हमारी उपासना की आवश्यकता नहीं है। हम उसकी पूजा करेंगे तो उसकी महिमा बढ़ जाएगी या नहीं करेंगे तो वह घट जाएगी, ऐसी बात नहीं है। अगर एक भी मनुष्य उसकी उपासना न करे, तो उसकी महिमा तनिक नहीं घटेगी औरं अगर सारे मनुष्य दिन रात उसकी पूजा करते रहैं तो भी उसकी महिमा जरा बराबर अधिक नहीं होगी। इस से उसके ब्रह्त्व में कोई अंतर नहीं होता। किसी और की उपासना से वह अप्रसन्न अवश्य होता है, परंतु इससे उसका कोई नुकसान नहीं होता। जो नुकसान होता है, वह मनुष्य का होता है। अगर ईश्वर चाहता कि संसार में किसी और की उपासना कभी होने न पाए, तो वह ऐसा कर सकता था। सूरज, चाँन्द और सितारों की तरह मानव को भी वह अपने नियम के अधीन रख सकता था, परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। विवशता की भक्ति वह मनुष्य से नहीं चाहता। इसी कारण अपनी उपासना पर किसी को विवश न करते हुए उसने सबको स्वतंत्रता दी ताकी लोगों की परीक्षा ली जा सके। कुरआन कहता है –

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ۭ
اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝

"यदि तुम्हारा प्रभु चाहता तो धरती पर जितने लोग हैं, सब के सब विश्वास कर लेते। फिर क्या तुम लोगों को विवश करोगे कि वह विश्वास करें?" (कुरआन : १०/९९)

उपासना का आदेश ईश्वर ने मनुष्य के हित के लिए दिया है। इसके माध्यम से वह उसे सदाचारी बनाता है। कुरआन में कहा गया है –

يَاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ وَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿٢١﴾

"ए लोगो! अपने पालनहार की उपासना करो जिसने तुम्हें पैदा किया और तुमसे पहले लोगों को भी, संभवत:तुम धार्मिक बनो।"

(कुरआन : २/२१)

उपासना धर्म का प्रमुख अंग है तथा मनुष्य को धार्मिक बनाने का माध्यम है । इसका अंतिम लक्ष्य सर्व-समर्पण है । अपनी इच्छा का त्याग करके प्रभु की इच्छा का पालन करना 'समर्पण' या 'ईश्वरशरण' कहलाता है । इसी समर्पण या आज्ञाकारिता का प्रतिदान स्वर्ग है । कुरआन ने इसी को मनुष्य का धर्म कहा है –

اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ وَ مَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ

"अल्लाह के पास समर्पण (इसलाम) ही वास्तव में धर्म है, और जिन लोगों को ग्रंथ दिया गया था, उन्होंने इसमें जो मतभेद किया वह परस्पर हठ के कारण किया, इसके पश्चात कि उनको सच्चा ज्ञान पहुँच चुका था ।" (कुरआन : ३/१९)

समर्पण को अरबी भाषा में **'इसलाम्'** कहा जाता है। इसी 'इसलाम' शब्द से 'मुस्लिम्' निकला है, जिसका अर्थ है 'समर्पणकारी'। समर्पण की परिभाषा करते हुए गीता में कहा गया है –

ब्रह्मण्याध्याय कर्माणि संगं त्यक्त्वा करोति य
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिबाम्भसा ।।

(भगवद् गीता ५/१०)

"आसक्ति को त्याग करते हुए जो व्यक्ति अपने सब कर्मो को ब्रह्म को अर्पण करता है, कमल के पत्ते की भांति वह पाप से लिप्त नहीं होता ।" (45) (भगवद् गीता : ५/१०)

गीता के अनुसार सारी सेवाएं एक ब्रह्म को समर्पित होनी चाहिए। कुरआन भी यही आदेश देते हुए कहता है –

قُلْ اِنَّ صَلَاتِیْ وَنُسُکِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ
الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۶۲﴾ لَا شَرِیْكَ لَهٗ ۚ وَ بِذٰلِكَ اُمِرْتُ
وَ اَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۱۶۳﴾

"कह दो कि मेरी प्रार्थना, मेरी कुर्बानी, मेरा जीना और मेरा मरना संसार के पालनहार अल्लाह के लिए है । उसका कोई हिस्सेदार नहीं है और मुझे इसी का आदेश मिला है और मैं सब से पहला आज्ञाकारी हूँ।"

(कुरआन : ६:१६२-१६३)

इसलाम के विषय में मशहूर है कि वह एक नया धर्म है जिसकी प्रतिष्ठा सातवीं सदी में हुई और हजरत मुहम्मद उसके प्रतिष्ठाता हैं। यह एक भ्रम है। धर्मका प्रतिष्ठाता स्वयं ईश्वर होता है और उसकी पुन:स्थापना उसके प्रतिनिधि करते हैं। इसलाम एक आदिस्रोत है और मानव सभ्यता का सर्वप्राचीन धार्मिक परंपरा है। विश्व के हर संप्रदाय में इसका प्रचार किया गया है। इस विषय में

(45) One who acts by dedicating all activities to the Ultimate Truth, giving up attachment, is not affected by sin, just as a lotus leaf in water.

(Bhagbad Gita : 5.10)

कुरआन कहता है – "वलि कुल्ली उम्मतिर् रुसूल" यानी प्रत्येक संप्रदाय के लिए ईश्वदूत आए हैं। हजरत मुहम्मद के पहले भी जितने ईशदूत आये थे, सब मुस्लिम थे और सबका एक ही धर्म था। इसलिए माननीय ईशदूत कहते हैं -

> "ईश्वरदूतों की माताएं भिन्न भिन्न होती हैं, परन्तु उनका धर्म एक ही होता है।" (सही बुखारी : ४/६५२)

दिव्यग्रन्थों के भाष्यों में प्रभेद के कारण हो, प्रक्षेप के कारण हो या किसी दर्शन के प्रभाव से हो, समाज में अंधविश्वास और कुसंस्कार प्रवेश करते हैं। इस कारण धर्म की पुन:स्थापना के लिए ईशदूतों का आविर्भाव होता रहा है। यह एक दिव्य परम्परा है। हजरत मुहम्मद (स.अ.) का आविर्भाव भी इसी कारण हुआ है। वह उसी जगतकर्त्ता के प्रतिनिधि हैं जिन्हें वेदों में 'ब्रह्म', बाइबिल में 'यहोवा' या कुरआन में 'अल्लाह' कहा गया है। उन्होंने किसी नये धर्म की प्रतिष्ठा नहीं की, न किसी नये तत्त्व का प्रचार किया न ही उनका कोई सिद्धान्त पहले आये ईशदूतों के सिद्धान्तों से भिन्न है। कुरआन साफ कहता है –

مَا يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ

> ''और तुम्हें (ए मुहम्मद) ऐसी बात नहीं कही गई जो तुमसे पहले के ईशदूतों को न कही गई है।'' (कुरआन : ४१/४३)

मानव का प्राकृतिक धर्म

धर्म सनातन सत्य पर आधारित है और मनुष्य के प्राकृतिक स्वभाव के अनुरूप है। ईश्वर का विधान कभी किसी बनावटी आदर्श का समर्थक नहीं रहा है। इसे मनुष्य की मनुष्यता या इनसान की इनसानियत भी कही जा सकती है। कहा जाता है कि इसलाम में इंसानित नहीं है। सच तो यह है कि जहाँ इंसानियत नहीं है, वहाँ इसलाम भी नहीं है, क्योंकि इसलाम मानव का प्राकृतिक धर्म है । ईशदूत हजरत मुहम्मद कहते हैं -

"हर बच्चा इसलाम के स्वभाव पर जन्म लेता है।"

(सही बुखारी : २/४४१)

अर्थात बच्चों के जो स्भाव हैं, वही इसलाम के स्वभाव हैं। यहाँ हजरत मुहम्मद ने इसलाम के एक ऊंचे आदर्श की जानकारी दी है।

बच्चे किसी भी धार्मिक परिवेश में जन्म लें, उनके स्वभाव एक जैसे होते हैं। उनमें मासुमियत होती है। उनके मन पवित्र होते हैं । झुठ या फरेब वे नहीं जानते। घृणा या द्वेष वे नहीं समझते। वे अपने असली प्रभु के अधीन होते हैं और केवल उसीका आदेश मानते हैं। यह आदेश उन्हें उसी प्रकार दिया जाता है जिस प्रकार अन्य प्राणीयों को दिया जाता है। इस समय वे अपने माता पिता की बात भी नहीं मानते। हम इन्हें बच्चों का 'स्वभाव' कहते है।

यदि किसी बच्चे को उसके स्वभाव के अनुसार जीने के लिए स्वतन्त्र कर दिया जाए, तो वह प्रकृति का दिया हुआ रास्ता अपनाएगा। यदि पानी को उसकी अपनी अवस्था में छोड़ दिया जाए, तो वह नीचे की ओर जाता है जो उसका धर्म है। पम्प के द्वारा उस पर दबाव ड़ालने पर ही वह अपने स्वभाव के विपरीत ऊपर उठता है। इसी प्रकार अगर मानव शिशु पर किसी संस्कृति या परम्परा का बाहरी दबाव न हो तो स्वाभाविक रूप से वह अपने प्राकृतिक धर्म पर ही रहेगा। वह उसी

को अपना मालिक समझेगा जो संसार के सभी जीवों का मालिक है। वह उसे ही अपना पालनहार मानेगा जो अन्य जीवों का पालनहार है। संकट में उसका मन उसीको पुकारेगा जिसे जानवर और परिंदे पुकारते हैं।

बचपन में मनुष्य का प्राकृतिक धर्म यह था कि उसका ईश्वर अविभाजित था और टुकड़ों में बटा हुआ न था। वह केवल उसीकी आज्ञा मानता था जिसकी आज्ञा चाँद-सूरज मानते हैं। उसके मुस्कान में कोई छल नहीं था। उसके आंसुओं में फरेब नहीं था। उसके मन को अहंकार ने छुआ नहीं था। उसकी आखों में घृणा न थी। दिल में कपट न था। प्रेम में स्वार्थ न था। उसकी जबान झुठ नहीं कहती थी। उसके हाथ जुल्म नहीं करते थे। उसका व्यवहार पीड़ादायक न था। न वह किसी के अधिकार छीनता था, न किसी पर अत्याचार करता था न किसी को हानि पहुँचाता था। अपने अनजाने में वह मासुम बच्चा सही मानव धर्म धारण किया हुआ था। वास्तव में यही इसलाम के स्वभाव हैं जो सभी बच्चों में होते हैं। इसी को हजरत मुहम्मद ने कहा कि हर बच्चा इसलाम के स्वभाव पर जन्म लेता है।

धीरे धीरे बच्चा अपने माँ बाप और परिवेश को पहचानने लगता है और उनसे प्रभावित होने लगता है। वह अपने प्रियजनों की भाषा, संस्कृति तथा परंपरा को अपनाने लगता है। उसके स्वभाव बदलते हैं। फिर उसके ईश्वर की संख्या वही हो जाती है जो उसके प्रियजनों की होती है, लेकिन उसका असली प्रभु उस समय भी वही रहता है जो माँ के गर्भ में उसकी देखभाल किया करता था। झुठ, छल, कपट, घृणा, द्वेष, अहंकार, अन्याय, अत्याचार आदि अप्राकृतिक आचरण बच्चा बाहर से सिखता है, परंतु किसी बनावट को उसका मन आसानी से स्वीकार नहीं कर पाता। इसलिए जब पिता उसे कभी झुठ बोलने कहते हैं, तो उसकी मासुम जबान से निकलती है "पिताजी ने कहा, पिताजी घर पर नहीं हैं।" परंतु वह अपने माता-पिता का धर्म अनुसरण करता है। यही कारण है कि वयस्क न होने तक अपने पिछले धर्म के लिए ईश्वर उसे उत्तरदायी नहीं ठहराते न ही उसे दंडित करते हैं। वयस्क हो जाने पर वह अपनी पसंद के लिए उत्तरदायी रहता है।

सतमार्ग की खोज उसकी निजी दायीत्व बन जाती है। उसकी अंतरात्मा उसे सचेतन करना आरम्भ कर देती है कि उसका मालिक एक है, सत्य, न्याय, परोपकार आदि पुण्य कर्म हैं और झुठ, फरैब, अत्याचार आदि पाप हैं। अपने अंतारात्मा का यह मौन संदेश हर मनुष्य सुन सकता है।

साधारण स्थिति में हम अपने पूर्वजों के धर्म को अपना धर्म मानते हैं। क्या सचमुच हम सोच समझ कर या किसी प्रमाण के आधार पर यह निर्णय लेते हैं ? हम यही सोच कर ऐसा करते हैं कि हमारे पूर्वजों में जो प्रथा रही है या जिस परंपरा की शिक्षित वर्गों में मान्यता है, वह गलत नहीं हो सकती। वास्तव में यह हमारा खयाल है। जिस परिवार में मनुष्य जन्म लेता है, उस परिवार की धार्मिक परंपरा सही भी हो सकती है और गलत भी, परंतु अपने पूर्वजों की परम्परा के प्रति स्वभाविक प्रेम के कारण हम उसे कभी गलत नहीं समझते। सारा जीवन हम उसे सही मानते हुए चलते हैं। इसी कारण मनुष्य को अपने स्वधर्म में वापस लौटाने के लिए ईश्वर मार्गदर्शन करते हैं।

मार्गदर्शन कैसे होता है ?

पेड़ पौधे चल फिर नहीं सकते। इसलिए उनका आहर उनके पावँ के पास मिल जाता है। पशु-पक्षी चल फिर सकते है। इसलिए उनका आहर जमीन पर फैला हुआ होता है जिसे वे तलाश करते हैं। अपनी रक्षा भी वे स्वयं करते हैं । मगर अन्य प्राणीयों की तुलना में एक मानव शिशु अधिक असहाय होता है। वह अपने आप न खा सकता है, न पी सकता है और न अपनी देख भाल कर सकता है। इसलिए, माता–पिता के द्वारा उसका पालन-पोषण किया जाता है। उनके मन में ममता भर दी जाती है। बाप उसके लिए मेहनत कर के जीवन के साधन जुटाता है। माँ उसकी देखभाल करती है। वह स्वयं नहीं खाती, परंतु अपने बच्चे को खिलाती है। खुद नहीं पहनती, परंतु बच्चे को पहनाती है। रात रात भर बच्चे की खातिर वह नहीं सोती । अपने सारे आराम का त्याग कर देती है मगर बच्चे को कष्ट होने नहीं देती। बच्चा गिरने लगे तो माँ उसे गिरने नहीं देती । यदि वह आग को पकड़ने लगे तो माँ उसका हाथ पकड़ लेती है।

धीरे धीरे बच्चा बड़ा होने लगता है, तो वही माँ जो अपने हाथों से बच्चे की सेवा करती थी, अब वैसा करना छोड़ देती है। हाथों से खिलाना, पहनाना, नहलाना या पीठ थपथपा कर सुलाना छोड़ देती है। अब वह केवल मौखिक उपदेश देती है। जब बच्चा पूर्ण रूपसे बालिग हो जाता है, तो फिर यह व्यवस्था भी बदल जाती है। वह अपनी जीविका स्वयं तलाश करता है। अपनी रक्षा आप करता है और अपने भले-बुरे का निर्णय भी स्वयं लेता है। इसी जगह पर मनुष्य को चारों तरफ फैले हुए बहुत सारे पगड़ंडीयों का सामना करना पड़ता है और भटक जाने की संभावना रहती है। अपनी सर्वोत्तम रचना को मार्ग दिखाने के लिए ईश्वर यहाँ एक भिन्न व्यवस्था करते हैं। अब ईश्वर के प्रतिनिधि और ईश्वरीय ग्रंथ माँ-बाप का स्थान ले लेते हैं और फिर उनकी आज्ञा का पालन उसका कर्त्तव्य हो जाता है। मौखिक और लिखित, दोनों प्रकार से मनुष्य का मार्गदर्शन किया जाता है। यह एक दिव्य परंपरा रही है। यह तरीका कुछ इस प्रकार है जिस प्रकार किसी अधिकारी के द्वारा प्रजा को सरकारी कानून की सूचना दी जाती है या राजदूत के माध्यम से राजा का आदेश पहुँचाया जाता है। ईश्वर के विधान को 'ग्रंथ' और उनके द्वारा नियुक्त पुरुषोत्तम को 'ईशदूत', 'ऋषी' 'प्रफेट', 'नबी' या 'रसुल्' कहा जाता है। इस अवस्था में मनुष्य अपने पसंद के मार्ग के लिए ईश्वर के सामने उत्तरदायी रहता है।

उपसंहार

बिभिन्न ग्रन्थों पर शास्त्रीय चर्चा का लक्ष्य पाठकों को केवल यह बताना है कि वेद, बाइबिल और कुरआन का मूल ईश्वरतत्त्व एक है। कुरआन ने कोई नया तत्त्व नहीं दिया है। वह उसी पुरानी बात को दोहराया है जो पहले वेद और बाइबिल कह चुके हैं।

सारे मनुष्य ईश्वर की प्रजा हैं और वह सबका भला चाहता है। समाज में मनुष्य किस प्रकार रहे, उसके विचार कैसे शुद्ध हों, उसके आचरण कैसे श्रृंखलित हों, उसके पारिवारिक, आध्यात्मिक और सामाजिक जीवन में कैसे शान्ति बनी रहे और किस प्रकार उसे मुक्ति मिले, इसलिए ईश्वर ने कुछ नियम दिये हैं जिनका पालन करना मनुष्य का कर्त्तव्य है । यही नियम या विधान 'धर्म' कहत्लाता है। जब मनुष्य अपनी इच्छा का त्याग कर के ईश्वर की इच्छा का पालन करता है तो वह धर्म का पालन करता है। इसी आज्ञाकारीता को 'ईश्वरशरण' भी कहा जाता है। महाभारत में कहा गया है "धारणात् धर्म मित्याहू: धर्मेण बिधृता: प्रजा।" (महाभारत ८/४५/५०) अर्थात् धर्म प्रजा को धारण करता है यानी उन्हें अनुशासनबद्ध रखता है। बाइबिल इस अनुशासन को 'नियम' कहता है और कुरआन उसे 'दीन्' कहता है।

मनुष्य के लिए एक ही धर्म मानव सभ्यता के प्रारम्भ से दिया गया है। बाद के समय में विभिन्न कारणों से उसे किसी महापुरुष, किसी ईशदूत, या किसी स्थान के नाम से नामित कर दिया गया और इस प्रकार एक धर्म का अलग अलग पहचान बन गया और यह मानव परिवार टुकड़ों में बट गया। कुरआन इसकी सूचना देते हुए कहता है —

وَ إِنَّ هٰذِهٖۤ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَّاحِدَةً وَّ أَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ ﴿٥٢﴾ فَتَقَطَّعُوْۤا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ۖ كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿٥٣﴾

"और तुमलोगों का यह संप्रदाय समूह एक ही भ्रातृत्व है और मैं तुम्हारा पालनहार हूँ, इसलिए तुम मुझसे डरो। फिर लोगों ने अपने धर्म को परस्पर टुकड़े टुकड़े कर लिया और जिस समूह के पास जो कुच्छ है, वह उसी में मगन है।" (कुरआन : २३/५२-५३)

विश्व के सभी ईशदूतों का आविर्भाव एक ही धर्म की संस्थापना के लिए हुआ। उपासना विधि, कर्मकाण्ड के रीति-रिवाज या अपराध नियंत्रण के तरीके उनमें कुछ भिन्न अवश्य रहे हैं, परन्तु सबके सिद्धान्त एक समान थे, क्योंकि वे सब एक ईश्वर के प्रतिनिधि थे और एक ही दीपक के प्रकाश थे। परमेश्वर के सिद्धान्त परिवर्त्तनशील नहीं हैं। सूरज के प्रकाश की तरह वे सदैव सबके लिए एक समान रहे हैं। कुरआन कहता है -

وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا

"और तुम अल्लाह के दस्तूर में परिवर्त्तन न पाओगे।"

(कुरआन : ४८-२३)

इसलिए, जिन लोगों को दिव्यग्रंथ दिये गये थे, कुरआन उन्हें उन ग्रन्थों की शिक्षा याद दिलाता है –

وَقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِالَّذِیْٓ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَاُنْزِلَ اِلَيْكُمْ
وَاِلٰـهُنَا وَاِلٰـهُكُمْ وَاحِدٌ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ

"और कहो, हम पर जो ग्रंथ प्रकट हुआ और तुम पर जो प्रकट हुआ, हम दोनों पर विश्वास करते हैं, हमारा ईश्वर और तुम्हारा ईश्वर एक ही है और हम उसी की आज्ञा पालन करने वाले हैं।"

(कुरआन : २९/४६)

कुरआन ने विश्व के सभी ईशदूत और सभी ईश्वरीय ग्रन्थों पर आस्था रखना और सबका सम्मान करना भक्तों पर अनिवार्य किया है और माननीय ईशदूतों के बीच अंतर न करने के भी आदेश दिये हैं। कुरआन केवल इतना

कहना चाहता है कि अल्लाह तुम्हारा वही ईश्वर है जिसे तुम ईश्वर, ब्रह्म, गड्, **भगवान या** यहोवा आदि नामों से पुकारते हो और जिसका परिचय तुम्हारे ग्रन्थों में भी दिया गया था। कुरआन तुमहारे उसी ईश्वर का ग्रंथ है जिसने पहले भी कई ग्रंथ प्रकट किये हैं और यह कुरआन उन ग्रंथो का समर्थन भी करता है। पूर्व ग्रंथों के सिद्धांतों का साफ साफ कुरआन में मिलना क्या यह सिद्ध करने के लिए काफी नहीं है कि यह ग्रंथ भी उसीका है? फिर कुरआन ने प्रश्न किया है -

اَوَلَمْ تَأْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا فِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ﴿١٣٣﴾

"क्या उनको पिछले ग्रंथों के प्रमाण नहीं पहुँचे?"

(कुरआन : २०/१३३)

पिछले ग्रन्थों की शिक्षा में प्रक्षेप या परिवर्त्तन के कारण समाज में नये नये आचार और कुसंस्कार प्रवेश कर गये। इसलिए, कुरआन के माध्यम से धर्म में संस्कार लाया गया है और पिछले ग्रन्थों के सिद्धांतो की पुन:स्थापना की गई है। ईश्वर ने अपना कोई सिद्धान्त नहीं बदला है। यही कारण है कि वे हमारे प्राचीन ग्रंथों में मिल जाते हैं। बिखरे हुए विश्व-परिवार को जोड़ने के लक्ष्य से कुरआन ने यह आग्रह किया है -

قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَآءٍۢ بَيْنَنَا
وَبَيْنَكُمْ اَلَّا نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهٖ شَيْـًٔا وَّلَا
يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ

"कहो, ए ग्रन्थवालो! आओ एक ऐसी बात की ओर जो हमारे और तुम्हारे बीच एक समान है, कि हम अल्लाह के अतिरिक्त किसी की सेवा न करें, न किसी को उसका हिस्सेदार बनाएं और न अल्लाह को छोड़ कर, हममें से कोई एक दूसरे को ईश्वर बनाए।"

(कुरआन : ३/६४)

मुसलमान कुरआन का अनुपालन इसलिए करते हैं कि कुरआन विशुद्ध ब्रह्मवाणी है। इसमें किसी प्रकार का परिवर्त्तन संभव नहीं है। इसकी शुद्धता बनाए रखने का दायित्व स्वयं ईश्वर ने ले रखी है। कुरआन में ईश्वर कहते हैं -

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ

"हमने इस कुरआन को प्रकट किया है और हम ही इसके संरक्षक हैं।" (कुरआन : १५/९)

इसलिए, कुरआन मनुष्य को गलत दिशा में नहीं ले जाएगा।

दूसरा कारण यह है कि यह ग्रंथ परमेश्वर का नवीनतम पत्र है। एक पिता पत्र के माध्यम से पुत्र को उपदेश देता रहता है। संतान की हर अवस्था में मार्गदर्शन करते हुए वह पत्र लिखता है। उसका लक्ष्य संतान का कल्याण होता है और वह नहीं चाहता कि पुत्र कोई गलत कार्य कर बैठे या उसे कोई नुकशान पहुँच जाए। बचपन में, किशोर अवस्था में, युवावस्था में और विवाहित जीवन में भी पिता की ओर से पत्र आते हैं। चुँकि संतान की आयु, अवस्था तथा आवश्यकता के अनुसार भिन्न स्थितियों में भिन्न उपदेशों की आवश्यकता भी होती है, इसलिए, पिता के सभी पत्रों के विषय-वस्तु एक समान नहीं होते। वे एक दूसरे से कुछ भिन्न भी होते हैं। लक्ष्य अवश्य उन सब का एक होता है।

आदिम काल से अबतक विश्व के विभिन्न भागों में मानव सभ्यता अनेक स्थितियों से गुजरी है। भिन्न भिन्न समय में समाज की आध्यात्मिक और सामाजिक स्थिति भिन्न भिन्न रही हैं और उन स्थितियों में कुच्छ विशेष मार्गदर्शन की आवश्यकता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। सिद्धान के अतिरिक्त विभिन्न ग्रन्थों में जो असमानताएं पाई जाती हैं, उनका कारण शायद यही रहा होगा, परंतु धर्म के सिद्धान्त सदैव अपरिवर्त्तनीय रहे हैं।

सभी पत्र पिता के हैं जो अपने अपने समय पर भेजे गये थे। परन्तु इस समय संतान उन उपदेशों का पालन जरुरी समझती है जो अभी-अभी प्राप्त पत्र में

दिये गये हैं। यही एक मुसलमान करता है। सभी दिव्यग्रन्थों को वह ईश्वरीय ग्रंथ मानता है, परन्तु आदेश अन्तिम ग्रंथ का पालन करता है और हजरत मुहम्मद के उपदेश अनुसार करता है क्योंकि वह परमेश्वर के अंतिम प्रतिनिधि हैं। जिस प्रकार एक कर्मचारी सभी सरकारी अधिकारीयों का सम्मान करता है, परन्तु अपने समय के अधिकारी की आज्ञा का पालन करना अपना कर्त्तव्य मानता है, उसी प्रकार एक मुसलमान सभी ईशदूतों का सम्मान करता है, परन्तु अंतिम ईशदूत के उपदेशों का पालन करना उचित मानता है। हजरत मुहम्मद एक इतिहास पुरुष हैं। उनकी ईश्वर-प्रतिनिधित्व सिद्ध हो जाने के बाद, उनकी अवमानना एक मुसलमान के विचार में ईश्वर की अवमानना है।

BIBLIOGRAPHY

1) Rig Veda, Ralph T.H. Griffith, 1889
2) Rig Veda Sanhita, Pandit Shriram Sharma Acharya
3) Atharva Veda, Ralph T.H. Griffith, 1895
4) Atharva Ved Sanhita, Pandit Shriram Sharma Acharya, Yuga Nirman Yojana, Gayatri Tapobhumi, Mathura (U.P.), 2005
5) Hymns of the Atharva Veda, Maurice Bloomfield, 1897
6) Yajur Veda Sanhita, Pandit Shriram Sharma Acharya
7) Swetasvataropanishad, Swami Tyagisananda, Sri Ramkrishna Math, Mylapore, Madras, 1949
8) Mundaka and Mandukya Upanishad, Swami Sarvananda, Sri Ramkrishna Math, Madras, 1920
9) Kena Upanaishad, Swami Sarvananda, Sri Ramkrishna Math, Madras, 1949
10) Kena Upanishad, Pandit Ganga Prasad Upadyaya, Delhi, 1900
11) Taittiriya Upanishad, Swami Sarvananda, Shri Ramakrishna Math, Madras, 1921
12) The Upanishads, Vol. XV, F. Max Muller, Oxford, London, 1884
13) The Upanishads, Swami Nikhilananda
14) Bhagabat Geeta (www.bhagabad-gita.org)
15) The Holy Bible, New International Version, New York International Bible Society, 1978
16) The Holy Bible, The Bible Society of India (www.hindibible.org)
17) The Meaning of the Holy Quran, Abdullah Yusuf Ali
18) The Translation of the Holy Quran, M.M. Pickthall
19) Sahih Al-Bukhari, Dr. Muhammad Muhsin Khan, Kitab Bhavan, Darya Ganj, New Delhi, 1984
20) Jami At-Tirmidhi, Abu Khaliyl (USA), Darussalam, Riyadh, KSA, 2007
21) The History of India, Mount Stuart Elphinstone, Vol.I, London
22) Encyclopedia Britannica, Ultimate Reference Suite, Chicago, 2011
23) The Church of the First Three Centuries, Alvan Lamson, DD, Boston, 1860
24) A History of the Origin of the Doctrine of the Trinity in the Christian Church, High H. Stannus, London, 1882
25) Life of Mahommed, Edward Gibbon, London
26) An Apology for Mohammed and the Koran, John Davenport, London, 1869

IQRA RESEARCH ACADEMY

Basic Aims & Objectives

- To research in the field of Islamic Studies and convey the true message of Islam, the Religion of Peace.
- To help people understand the fundamental teachings Islam and to remove misconceptions and misunderstandings about Islam.
- To promote the moral teachings of common religious values for developing the spirit of Universal Brotherhood.
- To promote multi-religious knowledge for reducing religious differences and developing communal harmony.
- To educate people about the Fundamental Human Rights and create awareness against the social evils like terrorism, corruption, drug abuse, dowry and adultery etc. in bringing peace in the society.
- To promote unity in diversity and develop the spirit of National Integration.

IQRA RESEARCH ACADEMY

Metro Manzil, Dewan Bazar, Cuttack - 753001 (Odisha)

Cell : 09437266208

बार बार सांप्रदायिक संघर्षों से छलनी हुआ भारत आज संकट के दौर से गुजर रहा है। सांप्रदायिकता के जहर से देश को बचाना समय की मांग है और हर भारतीय की नैतिक जिम्मेदारी है। अन्य धर्म के प्रति घृणा.या द्वेष की भावना सांप्रदायिक तनाव का मूल कारण है। धर्म कभी भी नफरत नहीं सिखाता। हमें एक दुसरे को समझने की आवश्यकता है। अगर हमारे बीच खड़ी अज्ञानता की दीवार गिरा दी जाए तो हमारे आपसी संबंध अवश्य बेहतर बन सकते हैं।

इस पुस्तक के रचयिता, शकील अहमद इसलाम और तुलनात्मक धर्म के अन्वेषक हैं तथा उड़ीशा के जाने माने लेखक हैं जिन्हों ने इसलाम पर अनेक पुस्तकों की रचना की है। यह पुस्तक सांप्रदायिक फासलों को कम करने की दिशा में उनका एक प्रयास है। इस में उन्होंने इसलाम के ईश्वरतत्त्व की व्याख्या करते हुए सनातन धर्म के साथ उसकी तुलनात्मक चर्चा भी की है और इस सत्य को सामने लाया है कि 'ब्रह्म' और 'अल्लाह' अभिन्न हैं तथा वेद और कुरआन के ईश्वरतत्त्व में कोई मौलिक अंतर नहीं है। लेखक ने दोनों धर्मों की एकात्मता को दर्शाते हुए अनेक समानताओं की प्रामाणिक जानकारी दी है जिनसे अधिकतर हिन्दू और मुस्लिम् अनजान हैं। यह जानकारी आपसी समझ बढ़ाने में काफी सहायता कर सकती है। हमें विश्वास है, भारत के हिन्दू और मुसलमानों के दिलों को जोड़ने के लिए इन्शा-अल्लाह् यह पुस्तक एक अमूल्य दस्तावेज साबित होगी।

मुफ्ती अबदुर रहमान नदवी
ईकरा रिसर्च एकाडेमी

IQRA RESEARCH ACADEMY
Metro Manzil, Dewan Bazar, Cuttack - 753 001
Cell : 09437266208
E-mail : iqraresearch@gmail.com
www.iqraresearch.net